खंड

3

रूपांतरण एवं अंतर–माध्यम अनुवाद

इकाई 9
अंतर–माध्यम अनुवाद एवं रूपांतरण में अंतःसंबंध 129

इकाई 10
अंतर–माध्यम अनुवाद : विविध आयाम 143

खंड 3 रूपांतरण एवं अंतर–माध्यम अनुवाद

एम.टी.टी. 033 के खंड 3, **रूपांतरण एवं अंतर–माध्यम अनुवाद** की परिकल्पना अंतर–माध्यम अनुवाद तथा उसके विविध आयामों की विस्तृत चर्चा के उद्देश्य को केंद्र में रखकर की गई है।

इकाई 9 का शीर्षक **अंतर–माध्यम अनुवाद एवं रूपांतरण में अंतःसंबंध** है। इस इकाई के अंतर्गत अनुवाद के अवधारणागत आयामों के विस्तार के संदर्भ में अंतर–माध्यम अनुवाद की चर्चा करते हुए बात की गई है। अनुवाद चिंतन में पाश्चात्य अनुवाद चिंतक रोमन जेकब्सन की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने अनुवाद के प्रकारों की चर्चा करते हुए अनुवाद में अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद की बात कही थी। भाषाविद पीयर्स के प्रतीक सिद्धांत के आधार पर भाषा को एक प्रतीक व्यवस्था माना गया है जिसके तहत अनुवाद एक भाषा के प्रतीकों का दूसरी भाषा के प्रतीकों में अनुवाद है। रोमन जेकब्सन इसे ही व्यापक रूप देते हुए अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद की वकालत करते हैं जिसके तहत एक विधा से दूसरी विधा, एक माध्यम से दूसरे माध्यम में अनुवाद किया जा सकता है। इसी तर्ज पर विकसित अंतर–माध्यम अनुवाद विभिन्न माध्यमों में आवाजाही का पक्षधर है। प्रस्तुत इकाई में अंतर–माध्यम अनुवाद की अवधारणा पर और विस्तार से बात की गई है।

इकाई 10 का शीर्षक **अंतर–माध्यम अनुवाद : विविध आयाम** है। इस इकाई के अंतर्गत अनुवाद के व्यापक संदर्भ में अंतर–माध्यम अनुवाद की चर्चा की गई है। अंतर–माध्यम अनुवाद के विविध आयामों पर बात करते हुए अध्ययन की अंतरविधात्मक पद्धति, लिखित पाठ से श्रव्य तथा श्रव्य से लिखित पाठ में अंतरण, लिखित पाठ से दृश्य–श्रव्य तथा दृश्य–श्रव्य से लिखित पाठ में अंतरण को अंतर–माध्यम अनुवाद कहा जाता है। विशेषज्ञों ने माना है कि अनुवाद की अंतर–माध्यमिक पद्धति साहित्य के विस्तार तथा उसके विविध आयामों की व्याख्या के लिए बेहद कारगर है। इसके माध्यम से सहृदय केवल पाठ का आनंद नहीं लेते अपितु उससे जुड़े अर्थ के विविध आयामों की सूक्ष्मता तक पहुँचते हैं जो किसी पाठ को भाषायी तथा सामाजिक–सांस्कृतिक सीमा से मुक्त कर अधिक ग्राह्य एवं व्यापक बनाता है। रूपांतरण भी अंतर–माध्यम अनुवाद का ही एक प्रकार है जिसकी सहायता से साहित्य विभिन्न विधाओं तथा विभिन्न समाज–संस्कृति में पुनर्जीवित होता है।

इकाई 9 अंतर–माध्यम अनुवाद एवं रूपांतरण में अंतःसंबंध

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 अनुवाद के अवधारणागत आयामों का विस्तार : अंतर–माध्यम अनुवाद

9.3 अनुवाद का अंतर–प्रतीकात्मक संदर्भ और प्रतीक सिद्धांत

9.3.1 'प्रतीक' क्या है?

9.3.2 'प्रतीकविज्ञान' की अवधारणा

9.3.3 प्रतीकसिद्धांत और अनुवाद का संदर्भ

9.4 अंतर–माध्यम अनुवाद : अर्थ और स्वरूप

9.5 अंतर–माध्यम अनुवाद और अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद में अंतर

9.6 अंतर–माध्यम अनुवाद की परंपरा

9.7 अंतर–माध्यम अनुवाद अध्ययन के आयाम

9.8 अंतर–माध्यम अनुवाद' और 'रूपांतरण' में अंतःसंबंध

9.9 सारांश

9.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

9.11 उपयोगी पुस्तकें

9.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- अंतर–माध्यम अनुवाद को अनुवाद के अवधारणागत आयाम के विस्तार के रूप में देख सकेंगे;
- अनुवाद के अंतर–प्रतीकात्मक संदर्भ की प्रतीक सिद्धांत से संबद्धता से अवगत हो सकेंगे;
- अंतर–माध्यम अनुवाद का अर्थ–स्वरूप और परंपरा से परिचित हो सकेंगे;
- अंतर–माध्यम अनुवाद अध्ययन के आयामों को जान सकेंगे; और
- अंतर–माध्यम अनुवाद' और 'रूपांतरण' में अंतःसंबंध को समझ सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

'अनुवाद एवं रूपांतरण के विविध आयाम' से परिचित कराने वाले पाठ्यक्रम एम.टी.टी. 031 के पिछले दो खंडों में आप अनुवाद और रूपांतरण की अवधारणा से परिचित हो चुके हैं। अब आपको यह स्पष्ट हो चुका है कि ये दोनों अवधारणाएँ अपने अर्थ और स्वरूप में व्यापक हो चुकी हैं और इनका संदर्भ कई आयाम लिए हुए है। जैसे, रूपांतरण को 'अनुवाद' शब्द के पर्याय के रूप में भी देखा जाता है और अनुवाद के एक प्रकार–विशेष के रूप में भी। आपको यह भी बोध हो चुका है कि 'अनुवाद' के एक प्रकार के रूप में 'रूपांतरण' का अर्थ–स्वरूप क्या है। वहीं, अगर एक अवधारणा के रूप देखें तो आप

यह भी समझ चुके हैं कि अनुवाद का संबंध एक ही भाषा में अनुवाद से भी एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद से भी।

इसके अलावा, आप यह भी जान चुके हैं कि अनुवाद दो भिन्न माध्यमों अथवा प्रतीक व्यवस्थाओं (एक भाषिक प्रतीक तथा दूसरा भाषेतर संप्रेषण प्रतीक) में भी होता है। अनुवाद का यह अंतर–प्रतीकात्मक संदर्भ हमें प्रतीक सिद्धांत पर विचार करने को मजबूर करता है। इसलिए इस इकाई में यह बताया गया है कि 'प्रतीक' क्या है? 'प्रतीकविज्ञान' की अवधारणा क्या है? साथ ही इसमें प्रतीकसिद्धांत का अनुवाद से संदर्भ भी स्पष्ट किया गया है। प्रतीकों को अंतरित करने वाले अनुवाद के इस प्रकार का संबंध मूलतः भाषिक प्रतीकों को भाषेतर व्यवस्था में अंतरण करने से है। जैसे, किसी कहानी–उपन्यास का फिल्मांतरण या किसी कविता का चित्रांकन। लेकिन, ध्यान देने की बात यह है कि अनुवाद की निरंतर बढ़ती व्यापकता आगे विस्तार प्राप्त कर रही है, जिसे अनुवाद चिंतन में 'अंतर–माध्यम अनुवाद' (Inter-Medial Translation) कहा जाता है।

इस इकाई में आपको अंतर–माध्यम अनुवाद के अर्थ और स्वरूप के साथ–साथ इस प्रकार के अनुवाद की परंपरा से परिचित कराया गया है। इकाई इस मूलभूत प्रश्न पर भी विचार व्यक्त करती है कि अंतर–माध्यम अनुवाद' और 'रूपांतरण' में अंतर्संबंध क्या है? उनमें आपस में अगर कोई अंतर है तो उसके आयाम कौन–से हैं?

9.2 अनुवाद के अवधारणागत आयामों का विस्तार : अंतर–माध्यम अनुवाद

अनुवाद को पारंपरिक अर्थ में एक भाषा में कही गई बात को टीका–भाष्य आदि के जरिए उसी भाषा में स्पष्ट रूप से व्यक्त करने या फिर परवर्ती अर्थ में एक भाषा में व्यक्त भावों–विचारों आदि को दूसरी भाषा में व्यक्त करना माना जाता रहा है। लेकिन, अनुवाद को केवल दो भाषाओं के बीच घटित होने वाले कार्य–व्यापार तक ही सीमित रखकर नहीं देखा जाता। यह कार्य–व्यापार एक ही भाषा में व्यक्त संदेश को उसी भाषा विशेष में केवल सरल–सहज शब्दों में प्रस्तुत कर देने या फिर किसी एक ही भाषा की एक बोली अथवा शैली से दूसरी बोली या शैली में प्रस्तुत कर देने को भी 'अनुवाद' के रूप में ही स्वीकार किया जाता है।

इसके अलावा, दो भिन्न संकेत व्यवस्थाओं के बीच होने वाले अर्थ के अंतरण को भी अनुवाद का ही रूप स्वीकार किया जाता है। यह भाषिक संकेत व्यवस्था और भाषिकेतर संकेत व्यवस्थाओं के बीच होने वाला अनुवाद होता है। इसमें एक संकेत व्यवस्था में कही गई बात को अर्थ परिवर्तित किए बिना ही दूसरी संकेत व्यवस्था में व्यक्त किया जाता है। इस आधार पर यह 'कथ्य का संकेतांतरण' होता है, जिसका संबंध दो संकेत व्यवस्थाओं के बीच होने वाले अंतरण व्यापार से है। उनमें से एक भाषेतर व्यवस्था होती है तथा दूसरी भाषिक संकेत व्यवस्था। अंतरण की इस प्रक्रिया को 'कथ्य का प्रतीकांतरण' भी कह दिया जाता है। इसमें कथ्य को प्रतीकांतरण की प्रक्रिया से लक्ष्य भाषा व्यवस्था या माध्यम में प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरण के लिए, यूरोपीय साहित्य में स्वर्ग से आदम और हव्वा के निष्कासन की विषय–वस्तु पर अनेक संकेत व्यवस्थाओं के द्रष्टा कलाकारों ने चित्रकला और साहित्य आदि अपनी रुचि तथा क्षमता के माध्यमों में अभिव्यक्ति प्रदान की है। इसी प्रकार, चित्रकला के माध्यम से उतरी लियोनार्दो द विंची की अमर कलाकृति '*मोनालिसा*' का भी उल्लेख किया जा सकता है जिसके आधार पर और उससे प्रभावित होकर रचित कृतियाँ वास्तव में कथ्य का प्रतीकांतरण है। इसी संदर्भ में भारत के प्रसिद्ध कलाकार राजा रविवर्मा की कलाकृति का भी उल्लेख करना अनुचित न होगा, जिसके आधार पर नाथूराम शर्मा 'शंकर' ने '*केरल की तारा*' के नाम से एक लंबी कविता लिखी थी। इन उदाहरणों के माध्यम से कहने का तात्पर्य यह है कि दो भिन्न माध्यमों के बीच अनुवाद (प्रतीकांतरण) के बीच भी अनुवाद होता है।

इस चर्चा के आधार पर, अनुवाद के तीन संदर्भ स्पष्ट होते हैं – (क) एक ही भाषा में अनुवाद (Intra-lingual Translation); (ख) एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद (Inter-

lingual Translation); और (ग) दो भिन्न माध्यमों अथवा प्रतीक व्यवस्थाओं (एक भाषिक प्रतीक तथा दूसरा भाषेतर संप्रेषण प्रतीक) में अनुवाद (Inter-Semiotic Translation)। अनुवाद के ये तीनों पक्ष 'अनुवाद' को व्यापक अर्थ–संदर्भ प्रदान करते हैं। रोमन जेकब्सन ने अपनी पुस्तक *'ऑन ट्रांसलेशन'* के *'ऑन लिंग्विस्टिक आस्पैक्ट्स ऑफ ट्रांसलेशन'* में अनुवाद के इन तीनों संदर्भों की चर्चा की है।

समय के साथ–साथ जिस तरह से साहित्य लेखन की विधाएँ विस्तार पाती जा रही हैं, वैसे ही अंतःभाषिक, अंतर–भाषिक; और अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद जैसे अनुवाद के अवधारणागत आयामों के संदर्भ भी विस्तार पा रहे हैं। जैसे, एक भाषा के छंद में कही गई बात को उसी भाषा में गद्य रूप में प्रस्तुत करना भी एक प्रकार का 'अंतःभाषिक विधात्मक अनुवाद' (Intra-lingual Genre Translation) है। विधात्मक अंतरण की यह स्थिति यदि दो अलग–अलग भाषाओं के बीच बनती है तो उसे 'अंतर–भाषिक विधात्मक अनुवाद' (Inter-lingual Genre Translation) कहेंगे।

इसी प्रकार रोमन जेकब्सन की कथ्य के प्रतीकांतरण की प्रक्रिया से लक्ष्य भाषा व्यवस्था या माध्यम में प्रस्तुत करने संबंधी 'अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद' की अवधारणा भी व्यापक हो रही है क्योंकि इसमें भाषिकेतर प्रतीक व्यवस्था से भाषिक संकेत व्यवस्था में कथ्य का अंतरण न होकर विपरीत स्थिति भी बनती है। उदाहरण के लिए, *रामायण–महाभारत* महाकाव्यों, आर.के. नारायण के उपन्यास *गाइड*, श्रीलाल शुक्ल के *राग दरबारी*, प्रेमचंद के *गोदान* या फिर फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी *मारे गए गुलफाम उर्फ तीसरी कसम* आदि उपन्यासों–कहानियों का फिल्म या सीरियल के रूप में रूपांतरण वास्तव में भाषिक प्रतीक व्यवस्था की दृश्यात्मक प्रस्तुति है यानी यह 'पाठ से दृश्य प्रस्तुति' है। इसी प्रकार, विज्ञापन, वृत्तचित्र, गीत आदि का निर्माण अर्थात 'पाठ की दृश्य प्रस्तुति' भी इसी के अंतर्गत आते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि इस प्रकार का रूपांतरण पाठ का दृश्य–श्रव्य रूप में प्रस्तुतीकरण है, जो वस्तुतः अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद का ही विस्तार है।

स्पष्ट है कि प्रतीकों को अंतरित करने वाले इस 'अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद' का संबंध मूलतः किसी कहानी–उपन्यास का फिल्मांतरण या किसी कविता का चित्रांकन करने जैसे भाषिक प्रतीकों को भाषेतर व्यवस्था में अंतरण करने से है। लेकिन, यहाँ एक मूलभूत प्रश्न यह उभरता है कि क्या हम अनुवाद के इस प्रकार को केवल अंतरण व्यवस्था तक ही सीमित रख सकते हैं? इस प्रश्न के उभरने का कारण यह है कि प्रतीकों के अंतरण की यह प्रक्रिया विपरीत भी हो सकती है। यानी भाषेतर प्रतीकों को भाषिक प्रतीक व्यवस्था में बदलने की स्थिति भी हो सकती है। वास्तविकता यह है कि देश–विदेश में ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं, जो भाषेतर प्रतीकों को भाषिक प्रतीक व्यवस्था में अंतरण का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि दो भिन्न माध्यमों के बीच अनुवाद (प्रतीकांतरण) के बीच भी अनुवाद होता है – भले ही वह भाषिक प्रतीक व्यवस्था से भाषेतर प्रतीक व्यवस्था में हुआ हो या फिर भाषेतर प्रतीक व्यवस्था से भाषिक प्रतीक व्यवस्था के अंतरण के रूप में। इसलिए, 'अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद' की अवधारणा को इन दोनों आयामों में देखने की आवश्यकता है। इसे हम निम्नलिखित आरेख की सहायता से स्पष्ट कर सकते हैं :

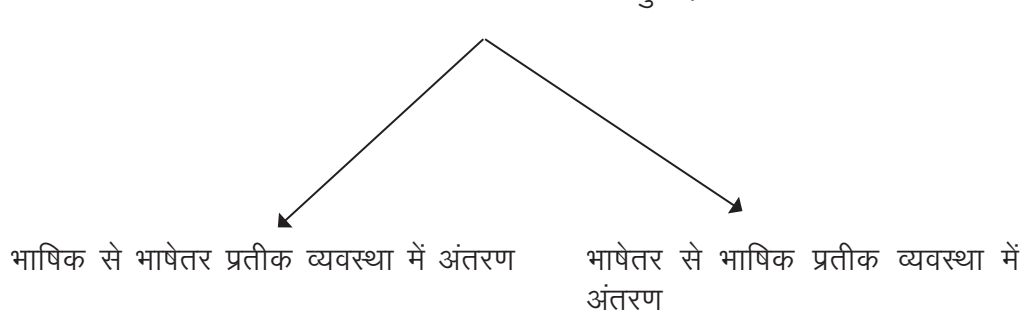

यह भी ध्यान देने की बात यह है कि वर्तमान संदर्भों में अनुवाद की व्यापकता जेकब्सन द्वारा बताए गए अनुवाद के भाषिक प्रकारों की तीन किस्मों से आगे भी विस्तार पा रही है। अनुवाद के संदर्भों का यह विस्तार 'अंतर–माध्यम अनुवाद' (Inter-Medial Translation) का रूप लिए हुए है। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि 'अंतर–माध्यम अनुवाद' है क्या? लेकिन, इस प्रश्न पर विचार करने से पहले, जेकब्सन की अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद की अवधारणा पर विशेष तौर पर ध्यान देने की जरूरत है। उनकी यह अवधारणा, हमें प्रतीक सिद्धांत की ओर ले जाती है। और 'अंतर–माध्यम अनुवाद' में भी प्रतीकों का अपना विशेष महत्व है। ऐसे में आपके मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि प्रतीक सिद्धांत क्या है? आइए, पहले हम इसी प्रश्न का समाधान खोजने का प्रयास करें।

9.3 अनुवाद का अंतर–प्रतीकात्मक संदर्भ और प्रतीक सिद्धांत

अनुवाद के अंतर–प्रतीकात्मक संदर्भ और प्रतीक सिद्धांत के मूल में 'प्रतीक' वह अवधारणागत शब्द है, जो व्याख्या की अपेक्षा रखता है। मानवीय व्यवहार में प्रतीकात्मक व्यवस्था का विशेष महत्व है क्योंकि मनुष्य अपने मनोगत भाव को प्रतीकों के रूप में ही संप्रेषित करता है। प्रतीक हमारे विचारों को अनुभूत कराने, उन्हें आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाज के संदर्भ में भी देखा जाए तो समाज में घटित होने वाला हर प्रकार के संचार में भी प्रतीक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रतीक, भाषा का संदर्भ भी लिए हुए हैं। अपने मनोगत भावों को दूसरों को संप्रेषित करने के लिए व्यक्ति के द्वारा व्यवहार में लाई जाने वाली भाषा भी एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें प्रतीकों को संप्रेषण के लिए प्रयोग में लाया जाता है। संप्रेषण के किसी न किसी रूप में हम प्रतीकों का ही प्रयोग करते हैं। विशेष यह भी है कि प्रतीक सामान्य रूप से अनुवाद तथा विशेष तौर पर अंतर–माध्यम अनुवाद से भी संबंधित हैं।

9.3.1 'प्रतीक' क्या है?

प्रतीक के जरिए मनुष्य को किसी वस्तु–पदार्थ, अवधारणा, क्रिया और गुण आदि जैसे मूर्त या अमूर्त आयामों का बोध होता है। वस्तु–पदार्थ आदि मूर्त रूप में नजर आते हैं तो अवधारणा, क्रिया और गुण आदि अमूर्त होते हैं। मूर्त पदार्थ हो अथवा अमूर्त गुण आदि – इनका भाषा के संदर्भ में प्रयुक्त किए जाने वाले 'शब्द' के साथ सीधा संबंध नहीं होता। शब्द और वस्तु आदि के बीच के संबंध को 'सांकेतिक संबंध' कहा जा सकता है। 'सोफा', 'कुर्सी', 'मेज', 'सेब', 'कंप्यूटर', 'पेन' (वस्तु), 'गुरुत्वाकर्षण', 'लोकतंत्र', 'कूटनीति', 'भूमंडलीकरण', 'पूँजीवाद (अवधारणा), पढ़ना, लिखना, खाना, पीना, चलना (क्रिया), अच्छा, बुरा, छोटा, बड़ा (गुण) आदि शब्द वास्तव में वस्तुओं/पदार्थों, अवधारणाओं, क्रियाओं या गुणों का संकेत करते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि 'प्रतीक', वस्तुओं आदि के वाचक शब्द होते हैं। इन्हें भौतिक रूप से 'अर्थ की इकाई' कहा जा सकता है क्योंकि इनके साथ अर्थ स्वतः या परंपरा से जुड़े होते हैं। विशेष यह भी है कि उनका अर्थ किन्हीं निश्चित प्रयोक्ताओं के लिए ही होता है। प्रतीक की अवधारणा को 'लाल बत्ती' के उदाहरण के जरिए समझा जा सकता है। 'लाल बत्ती' रुकने का प्रतीक है और 'हरी बत्ती' चलने का। देखा जाए तो लाल या हरी बत्ती स्वयं में कोई ऐसा अर्थ नहीं है जो 'रुकने' अथवा 'चलने' के भाव को व्यक्त करे। निश्चित प्रयोक्ता लाल तथा हरे रंग प्रतीक के जरिए 'रुकने' अथवा 'चलने' के अर्थ को ग्रहण करते हैं। इस तरह, संकेत अर्थ को अभिव्यक्ति प्रदान करने का आधार नजर आता है।

'प्रतीक' संबंधी इस अवधारणा को भाषा के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। भाषा में जितने भी शब्द प्रयुक्त किए जाते हैं, वे स्वयं में संकेत–रूपी होते हैं और विभिन्न स्वरों–व्यंजनों (अर्थात ध्वनियों) के संयोग से बनते हैं। ऐसे प्रतीकों को 'ध्वन्यात्मक प्रतीक' कहा जाता है। यही कारण है कि भाषा को 'ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था' कहा जाता है। शब्द का वस्तु आदि के साथ भाषिक संकेत के माध्यम से संबंध स्थापित होता है, विचार को स्वरूप और आकार प्राप्त होता है; उसकी अनुभूति होती है। यही कारण है कि सांकेतिक संबंधों का वाचक होने के फलस्वरूप 'प्रतीकों' को 'संकेत' भी कहा जाता है

और इन्हें अक्सर एक–दूसरे के पर्याय के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। इसी आधार पर प्रतीकों के संदर्भ में अध्ययन संबंधी विज्ञान को 'प्रतीकविज्ञान' अथवा 'संकेतविज्ञान' (अर्थात संकेतों का विज्ञान) भी कहा जा सकता है।

9.3.2 'प्रतीकविज्ञान' की अवधारणा

भाषा का संकेतों की दृष्टि से अध्ययन–विवेचन 'प्रतीकविज्ञान' या 'संकेतविज्ञान' (Semiotics) है। अंग्रेजी में 'Semiotics' के अलावा, इसे 'Semiology' भी कह दिया जाता है। संकेतविज्ञान, संकेतों एवं प्रतीकों की परिधि में केंद्रित रहता है। यह, संकेतों और उनके द्वारा अर्थों के संप्रत्ययीकरण (अवधारणा) और संचार की कार्य–प्रणाली का व्यवस्थित अध्ययन करने वाला विज्ञान है। संकेतविज्ञान, अर्थ निर्माण प्रक्रिया का अध्ययन करता है। इसके अंतर्गत उन सभी भाषिक चिह्नों का अध्ययन शामिल है जो अर्थ निर्माण में सहायक होते हैं।

देश–विदेश के संदर्भ में यदि देखें तो यह कहा जा सकता है कि संकेतों के अध्ययन संबंधी प्रयास प्राचीनकाल से ही चले आ रहे हैं। संकेतों की प्रकृति के आदि के बारे में यूनानियों, रोमनों, भारतीय और चीनियों ने प्रकारांतर से चिंतन–विवेचन किया है। इस संदर्भ में भारतीय चिंतक भर्तृहरि, यूनानी दार्शनिक प्लेटो–अरस्तू, रोमन विद्वान संत ऑगस्टीन आदि के नाम विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं। जहाँ तक 'सेमियोटिक्स' शब्द प्रयोग का संबंध है, आधुनिक अर्थ में इस शब्द के प्रथम बार प्रयोग का श्रेय 17वीं शताब्दी के व्यवहारवादी ब्रिटिश दार्शनिक जॉन लॉक को दिया जाता है। और, ज्ञान की व्यवस्थित शाखा के रूप में संकेतविज्ञान चिंतन के क्षेत्र में चार्ल्स सैंडर्सन पीयर्स (Charles Sanderson Peirce) और फर्दिनाँ द सस्यूर (Ferdinand De Saussure) के नाम विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं।

प्राचीनकाल से चले आ रहे संकेतों संबंधी चिंतन के आलोक में सस्यूर ने मानवीय व्यवहार को विभिन्न प्रतीकात्मक व्यवस्था के संदर्भ में देखा और 'संकेतविज्ञान' की अवधारणा को आगे बढ़ाया। डॉ. रबींद्रनाथ श्रीवास्तव और डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी ने उनके विचारों को उद्धृत करते हुए लिखा है कि *सस्यूर का यह विचार था कि 'हम एक ऐसी विज्ञान की कल्पना कर सकते हैं जो समाज के भीतर प्रतीकों के जीवंत पक्ष और उसके प्रकार्यात्मक संदर्भों का अध्ययन करता हो।.....ग्रीक शब्द प्रतीक (*Semeion*) के आधार पर हम इसे प्रतीकविज्ञान (*Semiology*) की संज्ञा दे सकते हैं।* इसमें कोई संदेह नहीं कि जिस समय सस्यूर ने अपने विचार रखे, उस दौर में अध्ययन का कोई क्षेत्र प्रतीकविज्ञान के रूप में मान्य नहीं था। इसलिए, उनके विचार प्रतीकविज्ञान की ओर इंगित मात्र करते हैं। सस्यूर ने भाषा को भी प्रतीकों की व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया।

प्रतीक सिद्धांत का प्रतिपादन चार्ल्स सैंडर्सन पीयर्स ने किया। पीयर्स को प्रतीकशास्त्री का दर्जा दिया जाता है। प्रतीकसिद्धांत की मूलभूत इकाई 'प्रतीक' है। पीयर्स ने प्रतीक को वह वस्तु माना है जो किसी व्याख्याता के लिए अन्य वस्तु के स्थान पर प्रयुक्त होती है – '*A Sign.....is something that stands to somebody for something else in some respect or capacity.*'। इस तरह पीयर्स बताते हैं कि 'संकेत कुछ ऐसा है जो किसी संदर्भ में किसी के लिए किसी रूप में कुछ है'। पीयर्स की इस अवधारणा को समझने के लिए हम एक उदाहरण लेते हैं। जैसे, 'शिवलिंग' एक प्रतीक है और आस्तिक उसे भगवान शिव का प्रतीक मानकर उसकी पूजा करते हैं। जबकि पीयर्स के शब्दों को इस उदाहरण पर लागू किया जाए तो कहा जाएगा व्याख्याता (अर्थात आस्तिकों/भक्तों) के लिए शिवलिंग 'वस्तु' है जो अन्य वस्तु (भगवान शिव) के लिए कुछ विशेष संदर्भ में प्रयुक्त होती है। इसमें व्याख्याता अथवा प्रयोक्ता के सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आदि विविध संदर्भ जुड़े हो सकते हैं। यह उदाहरण सस्यूर की उस अवधारणा को पुष्ट करता है कि समाज के भीतर के प्रतीकों के जीवंत पक्षों और उसके प्रकार्यात्मक संदर्भों का अध्ययन करने के लिए वैज्ञानिक दृष्टि अपनाना प्रतीकविज्ञान है।

प्रतीकों की व्यवस्था के रूप में यदि हम भाषा को देखें और उस पर प्रतीकविज्ञान की अवधारणा को लागू करें तो यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक प्रतीक की अवधारणा तीन इकाइयों के आधार पर निर्मित होती हैं। ये इकाइयाँ हैं – (1) वस्तु या संकेतित वस्तु (referent), (2) अर्थ या संकेतार्थ (reference); और (3) प्रतीक या संकेतन प्रतीक (sign)। प्रतीक की अवधारणा इन्हीं तीनों इकाइयों पर आधारित है।

यदि इन तीनों इकाइयों का अर्थ जानने या इनकी व्याख्या करने की कोशिश की जाए तो यह कहा जा सकता है कि इनमें से 'संकेतित वस्तु' (referent) का संबंध बाह्य जगत में स्थित वास्तविक और यथार्थ इकाई अर्थात भौतिक पदार्थ से है। जैसे, 'पेड़', 'कुर्सी–मेज', 'कंप्यूटर', 'भालू' आदि वास्तविक पदार्थ। ये सभी वस्तुएँ इंद्रियगोचर होती हैं, नजर आती हैं। वहीं, संकेतार्थ से अभिप्राय व्याख्याता (प्रयोक्ता) से है और यह प्रयोक्ता के मन में स्थित मूर्त–अमूर्त इकाई की अवधारणा, मानसिक बोध अथवा बिंब से जुड़ा है। भौतिक वस्तु का यह मानसिक बोध या मानस–पटल पर बना इनका बिंब ही उस वस्तु का अर्थ या संकेतार्थ (reference) है। और 'संकेतन प्रतीक' इस संकेतार्थ को भाषिक ध्वनियों के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली इकाई है जो संकेतित वस्तु के स्थान पर कुछ विशिष्ट संदर्भों में प्रयुक्त होती है।

प्रतीक सिद्धांत बताता है कि कथ्य ही 'संकेतार्थ' है और 'संकेतन प्रतीक' का नाम उसकी अभिव्यक्ति। लेकिन, यहाँ यह ध्यान रखने की जरूरत है कि भाषा के संदर्भ में कथ्य और अभिव्यक्ति के बीच संबंधों की प्रकृति सादृश्यता पर आधारित न होकर यादृच्छिक (arbitrary) होती है। इसीलिए कोई भी भाषिक संकेत अपने मूल रूप में यादृच्छिक होते हैं। यादृच्छिक के लिए पर्याय के तौर पर 'आरोपित' शब्द भी प्रयुक्त किया जा सकता है। यादृच्छिकता का अर्थ है – संकेत रूपी शब्द और उसके वाचक पदार्थ में कोई ऐसा बाह्य संबंध नहीं होता जिसके आधार पर भाषिक संकेत के द्वारा शब्द का अर्थ निर्धारित किया जा सके। उदाहरण के लिए महल, पेड़, पानी, आग, पढ़ना आदि किसी भी शब्द को देखा जा सकता है, जो वाचक भाव को बाहरी रूप से किसी भी प्रकार से प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। इस प्रकार के शब्दों को व्याकरण में 'रूढ़ शब्द' कहा जाता है, जो वस्तुतः यादृच्छिक भाषिक संकेत के अर्थ को व्यक्त करते हैं। संकेत रूपी शब्द और उसकी वाचक वस्तु या पदार्थ में यादृच्छिकता के कारण किसी एक कथ्य के लिए भाषा में अनेक पर्याय संभव है। जैसे, 'कमल' के लिए 'पंकज', और 'जलज' आदि।

इसके अलावा, हमें इस पक्ष की ओर भी ध्यान देना जरूरी है कि 'वस्तु' और उसका 'अर्थ' सार्वभौमिक होता है यानी वह विश्व की सभी भाषाओं के प्रयोक्ताओं के लिए समान होता है। अगर भिन्नता व्याप्त होती है तो केवल शब्द के स्तर पर। कथ्य और अभिव्यक्ति के बीच संबंधों की यादृच्छिक प्रकृति के कारण ही विश्व की सभी भाषाओं में एक ही वस्तु–पदार्थ, अवधारणा, क्रिया और गुण के लिए अलग–अलग शब्द व्यवहार में लाए जाते हैं। इसीलिए हमें भाषाओं का अलग–अलग अस्तित्व नजर आता है, अन्यथा विश्व की विविध भाषाओं में एकसमान वस्तुओं–अवधारणाओं आदि के लिए एक जैसे ही शब्द विद्यमान होते और व्यवहार में लाए जाते। इसे हम दूसरे शब्दों में इस प्रकार कह सकते हैं कि एक भाषा के कथ्य को जिस रूप में कोई भाषा अभिव्यक्ति देती है, दूसरी भाषा उससे भिन्न रूप में भी उसे अभिव्यक्ति दे सकती है। उदाहरण के लिए, 'गुलाब' (वस्तु) तथा उसका अर्थ देश–विदेश की हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी, तमिल, जर्मन, चीनी, जापानी, रूसी, तेलुगु आदि सभी भाषा–भाषियों के लिए समान है और उसकी प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति भिन्न है। हिंदी भाषाभाषी 'गुलाब' कह देगा तो अंग्रेजी–भाषी उसे 'rose' कहेगा। इसी प्रकार, अन्य भाषाओं में उसके लिए अलग–अलग शब्द मिल सकते हैं किंतु फूल के रूप में वस्तु और उसका अर्थ एकसमान रहता है। स्पष्ट है कि कथ्य को एकसमान रूप में ग्रहण करके उसे दो भिन्न प्रतीक व्यवस्थाओं के द्वारा दो भिन्न–भिन्न रूपों में व्यक्त किया जा सकता है। प्रतीक की अवधारणा के आधार इन तीनों इकाइयों – संकेतित वस्तु, संकेतार्थ और प्रतीक – के परस्पर संबंध को निम्नलिखित आरेख की सहायता से व्यक्त किया जा सकता है :

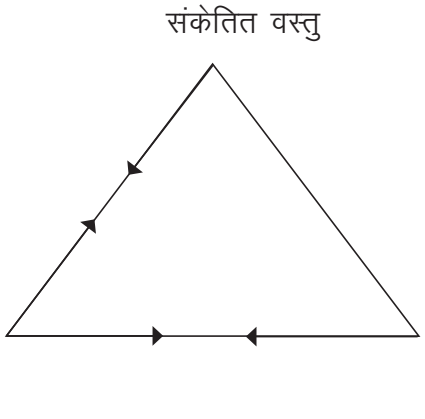

यहाँ यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि संकेतित वस्तु, संकेतार्थ और संकेतन प्रतीक के बीच सरल संबंध होता है। लेकिन, संकेतित वस्तु और संकेतन प्रतीक के बीच में संबंध सीधा न होकर आरोपित होता है। कहने का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक प्रतीक से पहले हम उसके अर्थ पर पहुँचते हैं और फिर अर्थ से उसकी 'वस्तु' तक। भाषा में यह 'प्रतीक' ही अभिव्यक्ति है और अर्थ उसका 'कथ्य'। इसलिए प्रतीक की अवधारणा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भाषा, कथ्य (signfied या concept) और अभिव्यक्ति (signifier या expression) की समन्वित इकाई है।

वहीं, यह भी ध्यान रखना चाहिए कि 'वस्तु' का जो अर्थ या संकेतार्थ होता है, उसके निर्माण में केवल भौतिक जगत की वस्तुओं का ही योग नहीं होता; उसमें व्याख्याता (प्रयोक्ता) के जातीय इतिहास, उसकी सभ्यता एवं सामाजिक–सांस्कृतिक मान्यताओं की भी भूमिका रहती है। इसीलिए, संकेतार्थ में अर्थ की अनेकानेक संभावनाएँ मानी जाती हैं। इस संदर्भ में अंग्रेजी के 'owl' शब्द का उल्लेख किया जाता है। 'owl' के लिए हिंदी भाषा में 'उल्लू' शब्द को प्रयुक्त किया जाता है, जिसे हिंदी भाषी समाज 'मूर्ख' के अर्थ में भी प्रयुक्त करता है। जबकि जापानी भाषी समाज के लिए 'owl' शब्द 'विद्वान' अर्थ का व्यंजक है। यह उदाहरण स्पष्ट रूप से बताता है कि किसी एक ही वस्तु को भिन्न–भिन्न भाषाओं में भिन्न–भिन्न प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है अथवा किसी एक अर्थ (कथ्य) को दो भिन्न प्रतीक व्यवस्थाओं के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है।

9.3.3 प्रतीक सिद्धांत और अनुवाद का संदर्भ

प्रतीक सिद्धांत यह सिद्ध करता है कि कथ्य ही 'संकेतार्थ' है और 'संकेतन प्रतीक' का नाम उसकी अभिव्यक्ति। कथ्य और अभिव्यक्ति के बीच संबंधों की यादृच्छिक प्रकृति के कारण किसी एक कथ्य के लिए भाषा में जहाँ अनेक पर्याय संभव हैं वहीं यह भी ध्यान देने योग्य है कि एक भाषा के कथ्य किसी भाषा में जिस रूप में व्यक्त किया जाता है, दूसरी भाषा में वह उससे भिन्न रूप में भी व्यक्त किया जा सकती है। उदाहरण के लिए, हिंदी में प्रयुक्त 'घोड़ा' शब्द के लिए संस्कृत में 'अश्व', तेलुगु में 'गुरमु', अंग्रेजी में 'horse', फ्रेंच में 'शवाल (cheval)', इतालवी में 'काबालो' (cavallo), जर्मन में 'फेएर्ट' (Pferd), और स्पेनिश में 'कावायो' (caballo) शब्द प्रयुक्त किए जाते हैं। इसी प्रकार, देश–विदेश की अन्य भाषाओं में भी 'घोड़ा' के लिए अलग–अलग शब्द मिल सकते हैं किंतु पशु–विशेष के रूप में 'वस्तु' और उसका अर्थ सभी भाषाओं में एक जैसा ही व्यक्त होता है। यह तथ्यात्मक आयाम बताता है कि कथ्य को एकसमान रूप में ग्रहण करके उसे दो भिन्न प्रतीक व्यवस्थाओं के द्वारा दो भिन्न–भिन्न रूपों में व्यक्त किया जा सकता है। अनुवाद का आयाम भी इसी संभावना से जुड़ा हुआ है और इसे व्यवहार में लाता है। इसपर थोड़ा विस्तार से विचार करना उपयुक्त होगा।

प्रतीकसिद्धांत संबंधी विचार को अनुवाद प्रक्रिया के दौरान व्यवहार में लाया जाता है। इस आधार पर कह सकते हैं कि अनुवाद में संकेतों के अर्थ को एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। यानी किसी एक प्रतीक व्यवस्था द्वारा व्यक्त अर्थ को दूसरी प्रतीक व्यवस्था के माध्यम से व्यक्त करना अनुवाद कहा जाता है। यह वास्तव में 'अर्थ

का प्रतीकांतरण' करते हुए अनुवाद कर्म करना है। डॉ. रीतारानी पालीवाल ने अनुवाद को प्रतीक व्यवस्था में अंतरण की प्रक्रिया मानते हुए लिखा है कि *'स्रोत भाषा में व्यक्त प्रतीक व्यवस्था को लक्ष्य भाषा की सहज प्रतीक व्यवस्था में रूपांतरित करने का कार्य अनुवाद है।'* इस आधार पर देखा जाए तो अनुवाद, दो भिन्न प्रतीक व्यवस्थाओं के बीच घटित होने वाला वह कार्य–व्यापार है जिसे 'अर्थ' अथवा 'कथ्य' को एक प्रतीक व्यवस्था से दूसरी प्रतीक व्यवस्था में अंतरित करने के लिए व्यवहार में लाया जाता है। अनुवाद में संकेतों के अर्थ पक्ष अथवा कथ्य को एक भाषा से दूसरी भाषा में अंतरित करने या परिवर्तित करने की ओर ध्यान देना होता है। अर्थ की यह समझ अनुवाद में ओर सहायक होती है, जो संकेत प्रणाली से सार्थक हो पाती है। इसलिए स्रोत भाषा (अनूद्य) पाठ की संकेत प्रणाली की पर्याप्त समझ के आधार पर लक्ष्य भाषा में अर्थवत्ता लाई जा सकती है। इसे निम्नलिखित आरेख की सहायता से समझा जा सकता है :

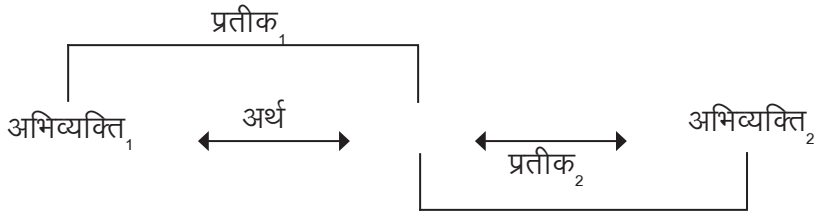

स्पष्ट है कि प्रतीक सिद्धांत का अनुवाद संबंधी परिप्रेक्ष्य बताता है कि कथ्य और अभिव्यक्ति के संबंधों पर आधारित प्रतीक की वास्तविक सतता केवल कथ्य अथवा अभिव्यक्ति पक्ष मात्र से न होकर उसकी प्रतीकात्मकता (signification) में होती है। प्रसिद्ध भाषाविद रोमन जेकब्सन ने प्रतीक व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में किसी भाषिक पाठ के प्रतीकांतरण को 'अंतःभाषिक', 'अंतर–भाषिक' और 'अंतर–प्रतीकात्मक' संदर्भों में देखने का प्रयास किया। इनके बारे में पिछले भाग 9.2 में चर्चा की जा चुकी है।

अब तक की गई चर्चा स्पष्ट करती है कि कथ्य को एकसमान रूप में ग्रहण करके उसे दो भिन्न प्रतीक व्यवस्थाओं के द्वारा दो भिन्न–भिन्न रूपों में व्यक्त करने संबंधी प्रतीकविज्ञान की मूलभूत मान्यता, अनुवाद की प्रक्रिया से जुड़कर उसके स्वरूप को व्यापक बना देती है। एक भाषा में व्यक्त प्रतीक व्यवस्था को दूसरी भाषा की सहज प्रतीक व्यवस्था में रूपांतरित करने का कार्य, अनुवाद को 'प्रतीकांतरण' की संज्ञा देने का आधार बनता है, जिसके अवधारणागत विकास की परिणति हमें वर्तमान समय में 'अंतर–माध्यम अनुवाद' की अवधारणा के रूप में नजर आती है।

प्रतीकविज्ञान की अवधारणा और मूलभूत मान्यताओं को जानने के बाद, आइए, अब हम यह जानें कि 'अंतर–माध्यम अनुवाद' से क्या अभिप्राय है।

9.4 अंतर–माध्यम अनुवाद : अर्थ और स्वरूप

अंतर–माध्यम अनुवाद को संप्रेषण के संदर्भ में देखने की आवश्यकता है। संप्रेषण, व्यक्तियों के बीच मानवीय भावनाओं, अनुभूतियों, विचारों, संवेगों, शिकायतों–संदेहों, तथ्यों, सम्मतियों–उपलब्धियों, विश्वासों–तर्कों आदि के आदान–प्रदान की प्रक्रिया है। यह संप्रेषण के 'स्रोत' (अर्थात संप्रेषक), संदेश प्राप्त करने वाले ग्रहीता (Receiver) के बीच संभव हो पाता है और इस प्रक्रिया में संप्रेषित किया जाने वाला अर्थपूर्ण संदेश (message of content) होता है। लेकिन यह तभी संभव हो पाता है जब संप्रेषक और ग्रहीता के बीच संप्रेषण का कोई माध्यम (channel) हो।

संप्रेषण कार्य के प्रमुख साधन के रूप में भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण है। मौखिक अथवा दृश्य आदि किसी भी प्रकार का संप्रेषण कार्य, वास्तव में अनुवाद–कर्म ही है। लेकिन, जब यह संप्रेषण भाषेतर रूप में अभिव्यक्ति पाता है तो वह मूर्तिकला, चित्रकला आदि का रूप धारण कर लेता है। चित्रकला, संगीतकला, नृत्यकला आदि के जरिए भी भावों अथवा विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान की जाती है। लेकिन इन कलाओं की विशेषता यह है कि

इनमें भाषिक ध्वनियों का प्रयोग नहीं होता। इसलिए ये सभी भाषेतर प्रतीक कहलाते हैं। संप्रेषण – चाहे वास्तु, मूर्ति, चित्र या फिर संगीत या काव्य (साहित्य) कला के रूप में अभिव्यक्ति पाए, तत्वतः अनुवाद ही होता है। इसे हमें 'विचारों का अनुवाद' कहते हैं। विचारों का यह अनुवाद वास्तव में अमूर्त (विचार) को मूर्त रूप देना है – भले ही यह मूर्तिता साहित्यिक रूप में अभिव्यक्ति पाए या फिर मूर्तिकला आदि गैर–साहित्यिक रूप में।

विचारों की अभिव्यक्ति तात्विक दृष्टि से भले ही 'अनुवाद' है, लेकिन यदि हम सैद्धांतिक संदर्भ में अनुवाद पर विचार करें तो यह पाते हैं कि अनुवाद एक संप्रेषण व्यवस्था या माध्यम से दूसरी संप्रेषण व्यवस्था/माध्यम में अंतरण की प्रक्रिया है। भाषा को संप्रेषण का सबसे अधिक सरल और मितव्ययी माध्यम स्वीकार किया जाता है, इसलिए अनुवाद को पहले भाषिक संप्रेषण का उपयोगी (gainful) माध्यम माना जाता रहा है। इसलिए एक समय था जब अनुवाद सिद्धांत को भाषाविज्ञान की शाखा माना गया। लेकिन, इस दिशा में गंभीर अध्ययनों से दोनों के बीच अंतराल बनते चलने की स्थिति का परिणाम अनुवाद की स्वतंत्र अध्ययन विषय के रूप में स्थापना रही और उसमें नए–नए आयामों–संदर्भों में अध्ययन होने लगे। अनुवाद के क्षेत्र में आए सांस्कृतिक मोड़ से उससे अनुवाद में भाषा के साथ–साथ संस्कृति का पक्ष भी जुड़ गया। उसके बाद से यह माना जाने लगा कि अनुवाद केवल भाषिक कार्य न होकर सांस्कृतिक संप्रेषण का कार्य–व्यापार भी है।

वैसे, केवल भाषा ही संप्रेषण का माध्यम नहीं है। वास्तविकता यह है कि भाषा और पाठ के भीतर भी संप्रेषण के कई अन्य माध्यम होते हैं। इसे अंतर–माध्यमिकता (inter-mediality) कहा जाता है। इसके अलावा, प्रतीक व्यवस्था के रूप में 'पाठ' को एक माध्यम से दूसरे माध्यम में ले जाया जाता है। लेकिन यह 'ले जाना' प्रस्तुतकर्ता की पसंद पर निर्भर करता है क्योंकि कोई भी संप्रेषण कार्य वास्तव में 'प्रस्तुति' ही होता है। यह प्रस्तुति शब्दों – मौखिक अथवा लिखित – के रूप में भाषा व्यवस्था के जरिए भी हो सकती है या फिर मूर्ति, नृत्य या संगीत कला आदि के माध्यम से भी। वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत कला या साहित्य कला आदि विभिन्न प्रकार के कला–रूपों में से किसी भी एक रूप से दूसरे रूप में 'ले जाना' को 'अंतर–माध्यम अनुवाद' (Inter-Medial Translation) कहा जाता है।

इस प्रकार, किसी भाषिक पाठ को दृश्य रूप में अंतरित करना या फिर दृश्य रूप को लिखित अभिव्यक्ति प्रदान कर देना 'अंतर–माध्यम अनुवाद' है। एक रूप से दूसरे रूप में अंतरण सरीखे इस अंतर–माध्यम अनुवाद को एक उदाहरण की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है। हिंदी साहित्य के भक्तिकालीन कवि सूर और मीरा की रचनाओं पर आधारित नृत्य–नाट्य प्रस्तुति अंतर–माध्यम अनुवाद के बेहतरीन उदाहरण हैं। इसी प्रकार, *आइने अकबरी* के वर्णन के आलोक में बनी कलाकृतियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मंदिरों के अलावा, अन्य लोक अवसरों–स्थलों पर नाट्य–प्रस्तुतियाँ या श्रव्य रूप में प्रस्तुति अंतर–माध्यम अनुवाद के ही प्रमाण हैं।

अब तक की गई चर्चा के आधार पर 'अंतर–माध्यम अनुवाद' को परिभाषित करते हुए हम यह कह सकते हैं कि मूर्ति, नृत्य, चित्र, संगीत या साहित्य कला रूपों के माध्यम से व्यक्त किए गए भावों अथवा विचारों को संप्रेषण के इन भाषेतर प्रतीक रूपों में से एक से दूसरे रूप में अंतरित करना 'अंतर–माध्यम अनुवाद' है।

9.5 अंतर–माध्यम अनुवाद और अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद में अंतर

'अंतर–माध्यम अनुवाद' संबंधी उपर्युक्त परिभाषा जहाँ अनुवाद के इस रूप के अर्थ और स्वरूप को साफ तौर पर अभिव्यक्ति प्रदान करती है कि यह विभिन्न कला रूपों में व्यक्त विचारों को एक से दूसरे रूप में अंतरित करने से संबंधित है। 'अंतर–माध्यम अनुवाद' की अवधारणा को व्यक्त करने वाला यह अर्थ–स्वरूप इसे 'अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद' से पृथक सिद्ध कर देता है।

'अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद' का संबंध किसी भाषा की प्रतीक व्यवस्था से किसी अन्य भाषेतर प्रतीक व्यवस्था में अंतरण से संबंधित है। जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है, चित्रकला, संगीतकला, नृत्यकला आदि के जरिए भी भावों अथवा विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान करने की प्रक्रिया में भाषिक ध्वनियों का प्रयोग नहीं होने के कारण ये भाषेतर प्रतीक कहलाते हैं। किसी उपन्यास–कहानी या नाटक को फिल्म या नाट्य–मंचन के रूप में अंतरित कर देना इसी प्रकार का प्रतीकांतर है। इस परिप्रेक्ष्य में उपन्यास–कहानी और कविता तो भाषिक प्रतीक हैं, लेकिन फिल्म भाषेतर प्रतीक हैं। इसी प्रकार, किसी कविता में व्यक्त भावों अथवा विचारों को चित्रकार द्वारा अपनी कूची से चित्र रूप में व्यक्त करना भी प्रतीकांतरण है।

जयशंकर प्रसाद विरचित काव्य–कृति *कामायनी* के कथ्य की जगदीश गुप्त द्वारा चित्रात्मक प्रस्तुति अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद का उदाहरण प्रस्तुत करती है। इसी तरह से कविताओं पर पेंटिंग भी इसी प्रकार का अनुवाद मानी जाती है। स्पष्ट है कि अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद के अंतर्गत 'किसी अन्य भाषेतर प्रतीक व्यवस्था में अंतरण' किया जाता है। अर्थात स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के प्रतीक माध्यम अलग–अलग होते हैं। जबकि 'अंतर–माध्यम अनुवाद' किसी भाषा की प्रतीक व्यवस्था से किसी अन्य भाषेतर प्रतीक व्यवस्था में या फिर किसी अन्य भाषेतर प्रतीक व्यवस्था से किसी भाषा की प्रतीक व्यवस्था में अंतरण से संबंधित है। इस तरह, पहला एक–दिशा की ओर अग्रसर होते हुए अंतरण कार्य है तो दूसरा, विचारों को दोनों दिशाओं की ओर उन्मुख अंतरण।

9.6 अंतर–माध्यम अनुवाद की परंपरा

विभिन्न कला–रूपों के माध्यम से व्यक्त विचारों को संप्रेषण के विभिन्न रूपों में से एक–दूसरे रूप में अंतरित करके अंतर–माध्यम अनुवाद करने की परंपरा को सृजनात्मकता के इतिहास से जोड़कर देखने की आवश्यकता है। अगर हम भारत के संदर्भ में ही देखें तो यह कहा जा सकता है कि भारतीय सृजनात्मकता वास्तव में अंतर–माध्यम अनुवाद की परंपरा है। इस परंपरा के संदर्भ में प्रो. अवधेश कुमार सिंह के ये विचार ध्यान देने योग्य हैं। *भक्तिकाल संस्कृति और साहित्य के क्षेत्र में अर्थांतरण या भावांतरण का काल था। कबीर, रैदास और मीरा आदि एक प्रकार से अंतरमाध्यम अनुवाद कर रहे थे जिसमें देह/शरीर, वाणी तथा लिखित संगीत सब शामिल थे। अक्का महादेवी, मीरा, लालद्यद आदि वाणी, देह, मुद्रा (नृत्य), संगीत का; कबीर सबद, साखी, वाणी तथा इकतारे का; नामदेव वाणी का; नानक सबद का तो तुलसीदास मुख्यतः लिखित का प्रयोग कर रहे थे। एक प्रकार से यह विमर्श विधाओं तथा कलारूपों का कुंभ था। मीरा जो पद गा रही थीं उसका नृत्य में अचेतन ढंग से साथ–साथ अनुवाद भी हो रहा था। एक ओर जीभ पाठ थी तो दूसरी ओर केवल देह और उसकी मुद्राएँ थीं और कभी–कभी वे दोनों का भी प्रयोग करती थीं। यह अंतरमाध्यम अनुवाद था जिसमें कई विधाओं में इसके एक साथ कई अनुवाद अस्तित्व में आते थे और समुद्र में उठती–मिटती लहरों की तरह बनते–मिटते जाते थे। एक प्रकार से यह अभौतिक* (intangible) *अनुवाद का काल था।*' हिंदी अनुवाद विमर्श (भाग.1) चयन एवं संपादन (वाद, अनुवाद, संवाद और हिंदी– अवधेश कु. सिंह), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, वर्ष–2019, पृ.12)

9.7 अंतर–माध्यम अनुवाद अध्ययन के आयाम

'अंतर–माध्यम अनुवाद' ने 'अनुवाद अध्ययन' को एक नया समावेशक आयाम प्रदान किया है। अंतर–माध्यम अनुवाद, एक विशेष प्रकार के सघन अध्ययन की अपेक्षा करता है। अंतर–माध्यम अनुवाद अध्ययन यह अपेक्षा करता है कि किसी भी अभिव्यक्ति की एक माध्यम से दूसरे माध्यम में अवतरण की प्रक्रिया और उसमें आए परिवर्तनों के प्रभावों आदि आयामों के संदर्भ में गहन अध्ययन किया जाना चाहिए।

वास्तु, संगीत, नृत्य, साहित्य आदि कलाएँ, विभिन्न माध्यमों में अभिव्यक्ति पाती हैं। इन विभिन्न कलाओं के बीच आपस में एकात्मकता पाई जाती है। इस एकात्मकता का पता

कॉलरिज के इन शब्दों से मिलता है कि 'काव्यकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत आदि सबकी आत्मा एक ही है। इन सब कलाओं को धर्म भोक्ता के मन में भावों को जाग्रत कर सौंदर्य के माध्यम द्वारा शाश्वत आनंद की उत्पत्ति करना है।' इसीलिए कलाओं में समानता नजर आ जाती है। बाबू गुलाबराय ने इसके लिए काव्य एवं चित्रकला के परस्पर–आश्रित संबंध का विवेचन करते हुए अपनी बात को सोदाहरण पुष्ट किया है। अपनी पुस्तक '*सिद्धांत और अध्ययन* में उन्होंने लिखा है। '*किसी काल विशेष की काव्य संबंधी तथा चित्रकला संबंधी प्रवृत्तियों का अध्ययन करें तो उनमें समानता मिलेगी। रविवर्मा की चित्रकला तथा मैथिलीशरण गुप्त की प्रारंभिक कविता में द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता तथा उपदेशात्मकता लक्षित होती है। बंगाल के चित्र में छायावादी कविता की भांति स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म की प्रवृत्ति अधिक है।* (पृ. 62–63) कला का यह परस्पर आश्रित संबंध ही अंतर–माध्यम अनुवाद का जनक बनता है।

पिछली शताब्दी के अंतिम दशकों में एक स्वतंत्र विषय–अध्ययन क्षेत्र के रूप में स्थापित और विकसित हुए 'अनुवाद अध्ययन' को तुलनात्मक अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन और अंतर–अनुशासनिक अध्ययनों से जोड़कर देखा गया। इस प्रक्रिया में अनुवाद को केवल भाषिक कार्य मानने संबंधी आधार–दृष्टि में भी परिवर्तन आया है। अनुवाद अध्ययन में जुड़ते नित–नए आयाम हमें रूपांतरण (Adaptation), पुनःलेखन (Rewriting); और पुनःसृजन (Re-creation) आदि के रूप में भी नजर आता है। और, अधुनातन नया आयाम 'अंतर–माध्यम अनुवाद' के रूप में विकसित हुआ है। इनमें से पुनःलेखन और पुनःसृजन के आयामों में अर्थ के स्तर पर कोई दुविधा (ambiguity) नहीं है, लेकिन रूपांतरण पर विचार करना जरूरी है। यह एक प्रश्न खड़ा करता है कि अगर "विचारों को संप्रेषण के एक रूप से दूसरे रूप में अंतरित करना 'अंतर–माध्यम अनुवाद' है" तो क्या यह रूपांतरण (Adaptation) नहीं है? वास्तव में इस प्रश्न का उत्तर दोनों में व्याप्त भेद के आलोक में तलाश करने की आवश्यकता है।

9.8 'अंतर–माध्यम अनुवाद' और 'रूपांतरण' में अंतःसंबंध

इस पाठ्यक्रम के दूसरे खंड में शामिल इकाइयों का अध्ययन करने के बाद आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि 'रूपांतरण' से क्या अभिप्राय है। यहाँ, थोड़ा उसी अर्थ को फिर से दोहराने की आवश्यकता है ताकि आपको अंतर–माध्यम अनुवाद और रूपांतरण के अंतःसंबंध का स्पष्ट रूप से बोध हो सके।

'Adaptation' के लिए 'रूपांतरण' के अलावा 'अनुकूलन', 'रूपांतर' और 'समायोजन' आदि शब्द भी व्यवहार में लाए जाते हैं। लेकिन, इनमें से सर्वाधिक व्यवहार्य शब्द 'रूपांतरण' ही है। हालाँकि 'रूप+अंतरण' से मिलकर बने होने की वजह से कुछ विद्वान इसे 'Translation' (अनुवाद) के अर्थ–संदर्भ में हिंदी पर्याय के रूप में भी देखते हैं। किंतु यह 'Translation' का पर्याय नहीं है। अगर इसे 'अनुवाद' का पर्याय माना जाए तो उस स्थिति में 'Adaptation' के लिए कोई भिन्न शब्द को मानक रूप में स्वीकार करना होगा।

वैसे, यह सही है कि 'अनुवाद' और 'रूपांतरण' में स्रोत भाषा पाठ की लक्ष्य भाषा में पुनर्प्रस्तुति होती है, किंतु इनमें अंतर भी व्याप्त है। अनुवाद करते समय अनुवादक को लक्ष्य भाषा के कथ्य में परिवर्तन करने की छूट नहीं होती। वह मूल में निहित भाव–अर्थ, संदेश, शैली और संदर्भ आदि के स्तर पर लक्ष्य भाषा पाठ के प्रति निष्ठावान बना रहता है, कथ्य को लक्ष्य भाषा में निष्ठापूर्वक प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। यानी वह अनुवाद करते समय स्रोत भाषा सामग्री के कथ्य, परिवेश, पात्र, भाषा और घटना आदि में छेड़छाड़ किए बिना दूसरी भाषा में समतुल्य प्रस्तुति का कार्य करता है। वहीं, 'रूपांतरण' में देश–काल एवं परिस्थिति के अनुरूप कथ्य, पात्र, परिवेश और भाषा के स्तर पर परिवर्तन तक कर देना स्वीकार्य होता है। परिवेश आदि में से स्रोत भाषा पाठ के किसी भी एक या उससे अधिक या फिर सभी स्तरों पर परिवर्तन की मात्रा कम अथवा अधिक हो सकती है। रूपांतरण करते समय यह लक्ष्य भाषा के देश–काल और परिस्थिति पर निर्भर करता है कि अनुवादक मूल में किस हद तक परिवर्तन करे।

स्रोत भाषा पाठ का लक्ष्य भाषा में रूपांतरण दो प्रकार से संभव है – पाठ के रूप में रूपांतरण; और दृश्य–श्रव्य रूप में रूपांतरण। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने शेक्सपियर के '*मर्चेंट ऑफ वेनिस*' का '*दुर्लभ बंधु*' नाम से जो अनुवाद किया है, वह पाठ से पाठ के रूप में रूपांतरण का प्रमाण है जिसमें स्थान–पात्रों आदि के नाम (जैसे, *Antonio* का '*अनंत*', *Bassanio* का '*बसंत*', *Venice* का '*वंशपुर*', *Frankfort* का '*फरीदकोट*', *Rome* का '*मालवा*' आदि) परिवर्तित कर दिए गए थे। एनातेले फ्रेंस की '*Thais*' के आधार पर प्रेमचंद का '*अहंकार*' भी इसी प्रकार के रूपांतरण का प्रमाण है। जबकि, स्रोत भाषा पाठ को लक्ष्य भाषा में टेलीविजन, फिल्म, सीरियल माध्यम के रूप में प्रस्तुत करना 'दृश्य–श्रव्यपरक रूपांतरण' है। *रामायण–महाभारत* आदि महाकाव्यों के आधार पर बने टी.वी. सीरियल, अनेक साहित्यिक रचनाओं के आधार पर बनी फिल्में आदि इसी प्रकार के रूपांतरण के प्रमाण हैं। जैसे, रस्किन बॉण्ड के '*Susanna's Seven Husbands*' पर आधारित विशाल भारद्वाज की '*सात खून माफ*', शेक्सपियर के '*मैकबेथ*' के आधार पर निर्मित '*मकबूल*', '*ओथेलो*' के आधार पर *ओंकारा*, और '*हैमलेट*' के आधार पर '*हैदर*' फिल्म आदि।

वास्तव में स्रोत भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा में पाठपरक अथवा दृश्य–श्रव्यपरक रूपांतरण 'अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद' (Inter-Semiotic Translation) का ही एक रूप हैं जिसमें भाषेतर प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त अर्थ–भाव अथवा कथ्य को भाषिक प्रतीक व्यवस्था के रूप में रूपांतरित किया हुआ होता है। लेकिन, यह रूपांतरण 'अंतर–माध्यम अनुवाद' से थोड़ी भिन्नता लिए हुए है। इस भिन्नता का मुख्य आधार यह है कि जहाँ 'रूपांतरण' में स्रोत भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा में पाठपरक अथवा दृश्य–श्रव्यपरक रूपांतरण किया जाता है, वहीं 'अंतर–माध्यम अनुवाद' में स्रोत भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा में पाठपरक अथवा दृश्य–श्रव्यपरक रूपांतरण के साथ–साथ दृश्य की पाठपरक प्रस्तुति भी संभव है। इस तरह रूपांतरण, पाठ से दृश्य–श्रव्य की ओर उन्मुख एकतरफा प्रयास है तो 'अंतर–माध्यम अनुवाद' दो–तरफा प्रयास है। इस दो–तरफा प्रयास के अंतर्गत दृश्य से शब्द (visual to text) और शब्द से दृश्य (text to visual), दोनों पक्ष शामिल हैं।

रूपांतरण और 'अंतर–माध्यम अनुवाद' में अंतर का एक अन्य आयाम यह भी है कि रूपांतरण में केवल साहित्य को अंतरित करने का पक्ष शामिल होता है, वहीं 'अंतर–माध्यम अनुवाद' में साहित्य के अलावा वास्तुकला, मूर्तिकला, संगीत आदि कलाओं में/से अंतरण भी किया जा सकता है।

अंत में यही कहा जा सकता है कि भारतीय सृजनात्मकता की अंतर–माध्यम अनुवाद परंपरा के आलोक में इसे सूक्ष्मताओं अथवा अंतःसंघर्षों के आधार पर समझने तथा तलाशने की आवश्यकता है क्योंकि वास्तव में आज का युग 'अंतर–माध्यम अनुवाद' का ही युग है। निकोलस बूरियो जैसे विद्वान जब सूचना–संचार प्रौद्योगिकी के प्रभाव की चर्चा करते हुए यह कहते हैं *'वर्तमान शताब्दी में फिल्में ज्ञान के प्रसार और पाठ का प्राथमिक आधार बनेंगी और डबिंग–सबटाइटलिंग जैसे अनुवाद के अन्य रूपों को विशेष महत्व प्राप्त होगा* तब 'अंतर–माध्यम अनुवाद' अपनी प्रासंगिकता खुद ही स्थापित कर लेगा।

9.9 सारांश

अपनी व्यापक अवधारणा में अनुवाद एक ही भाषा, एक भाषा से दूसरी भाषा और दो भिन्न माध्यमों अथवा प्रतीक व्यवस्थाओं (एक भाषिक प्रतीक तथा दूसरा भाषेतर संप्रेषण प्रतीक) के अंतरण से संबंधित है। इनमें से प्रतीक व्यवस्थाओं का संदर्भ वास्तव में प्रतीक सिद्धांत से संबंधित है। मानवीय व्यवहार में प्रतीकात्मक व्यवस्था का विशेष महत्व है। मनुष्य अपने मनोगत भावों को प्रतीकों के रूप में ही संप्रेषित करता है। प्रतीकों का संबंध भाषा के साथ–साथ अनुवाद से भी है। इसीलिए अनुवाद के इस रूप को 'अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद' कहा गया है। लेकिन, अनुवाद की निरंतर बढ़ती व्यापकता, विस्तार पाकर 'अंतर–माध्यम अनुवाद' (Inter-Medial Translation) का रूप भी धारण करती जा रही है। प्रस्तुत इकाई में अंतर–माध्यम अनुवाद के अर्थ–स्वरूप, परंपरा और रूपांतरण के साथ

इसके अंतर्संबंध संबंधी जानकारी दी गई है। पाठ्यक्रम की अगली इकाई में हम आपको अंतर–माध्यम अनुवाद के विविध आयामों से परिचित कराएँगे।

9.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. अंतर–माध्यम अनुवाद के संदर्भ में अनुवाद के अवधारणागत आयाम के विस्तार पर प्रकाश डालिए।
2. 'प्रतीक सिद्धांत और अनुवाद का संदर्भ' पर एक निबंध लिखिए।
3. अंतर–माध्यम अनुवाद से आप क्या समझते हैं? इसके स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
4. अंतर–प्रतीकात्मक और अंतर–माध्यम अनुवाद में अंतर स्पष्ट कीजिए।
5. अंतर–माध्यम अनुवाद और रूपांतरण में अंतर्संबंध स्पष्ट कीजिए।

9.11 उपयोगी पुस्तकें

- Catford, John Cunnison, 1965, A Linguistic Theory of Translation, Oxford : Oxford University Press.
- Tymoczko, Maria, 2006, Reconstructing Translation Theory, Integrating non-western Thought about Translation, Theo Hermans (ed.), (2006). Translating Others, vol.1. Manchester:John Benjamin Publishing Company.
- Tymoczko, Maria, 2007, Enlarging Translation, Empowering Translators, Manchester : St. Jerome Publishing.
- Mukherjee, Tutun, 2012, Tagore's Women Protagonists through Ray's Camera : Re-presenting the Shifting Concepts of History, Culture and Identity, In Mohd. Asaduddin and Anuradha Ghosh (eds.), Filming Fiction : Tagore, Premchand and Ray, New Delhi, Oxford University Press.
- Mukherjee, Tutun, Intermediality and Translation: Pedagogical Possibilities, https://www.ntm.org.in/download/ttvol/volume12-2/article,201.pdf
- Montessi, Vanessa, Translating Paintings into dance : Marie Chouinard's The Garden of Earthly Delights and the challenges posed to a verbal-based concept of Translation, https://jostrans.org/issue35/art_montesi.pdf

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 10 अंतर–माध्यम अनुवाद : विविध आयाम

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 अंतर–माध्यम अनुवाद : अनुवाद का व्यापक संदर्भ

10.3 अंतर–माध्यम अनुवाद के विविध आयाम

10.3.1 अंतर–माध्यम अनुवाद : अध्ययन की अंतरविधात्मक पद्धति

10.3.2 लिखित पाठ से श्रव्य तथा श्रव्य से लिखित पाठ

10.3.3 लिखित पाठ से दृश्य–श्रव्य तथा दृश्य–श्रव्य से लिखित पाठ

10.4 अंतर–माध्यम अनुवाद : साहित्य के विस्तार के संदर्भ में

10.5 रूपांतरण : अंतर–माध्यम अनुवाद का एक प्रकार

10.6 सारांश

10.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

10.8 उपयोगी पुस्तकें

10.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे :

- अनुवाद के व्यापक संदर्भ से क्या तात्पर्य है;
- अंतर–माध्यम अनुवाद के विविध आयाम कौन–कौन से हैं;
- किस प्रकार अंतर–माध्यम अनुवाद साहित्य अध्ययन को परंपरागत ढाँचे से मुक्त करता है;
- रूपांतरण किस प्रकार अंतर–माध्यम अनुवाद का एक प्रकार है।

10.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आप पढ़ चुके हैं कि अंतर–माध्यम अनुवाद से क्या तात्पर्य है तथा किस प्रकार वह अनुवाद की पारंपरिक अवधारणा से भिन्न है। प्रस्तुत इकाई में आप जानेंगे कि अंतर–माध्यम अनुवाद के विविध आयाम कौन–कौन से हैं तथा किस प्रकार अंतर–माध्यम अनुवाद किसी सीमित विधा तथा साँचे में रखे साहित्य को मुक्त करने का काम करता है। यह मुक्ति साहित्य को पंख लगाने का काम करती है। यूँ तो अनुवाद स्वयं में किसी एक भाषा तथा समाज में रचित रचना को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से उसे बहुआयामी बनाता है। एक रचना अनुवाद के माध्यम से भाषा, समाज, संस्कृति और भौगोलिक सीमाओं को लाँघकर बहुपठित बन जाती है। अनुवाद से संबंधित विविध पाठ्यक्रमों तथा स्रोतों के माध्यम से आप यह बात अवश्य जानते होंगे। लेकिन किसी रचना को भाषायी जकड़न से अथवा किसी एक शिल्प अथवा विधा से मुक्त करना उसे और अधिक बहुआयामी तथा दूरगामी बनाता है। अंतर–माध्यम अनुवाद से संबंधित इस खंड के अध्ययन के माध्यम से हम यह जानेंगे कि किस प्रकार अनुवाद की सीमित

परिभाषा से परे अंतर–माध्यम अनुवाद अधिक उदार होकर इन रचनाओं को और अधिक संप्रेषणीय बनाता है।

आप टी.वी., रेडियो, सिनेमा, कार्टून, एनिमेशन, कॉमिक्स आदि विभिन्न विधाओं के बारे में जानते हैं तथा आपको इन सबका अनुभव भी होगा। ये सब क्या हैं? ये सब वास्तव में किसी रचना को प्रदत्त पंख हैं जो अपनी उड़ान में भौगोलिक एवं सांस्कृतिक सीमाएं लांघकर विस्तृत समाज तक पहुँच पाए हैं।

आइए, प्रस्तुत इकाई के माध्यम से जानें कि अंतर–माध्यम अनुवाद किस प्रकार एक ऐसा माध्यम है जो विभिन्न विधाओं, शैलियों तथा टेक्नोलॉजी से जुड़कर रचना को बहुआयामी बनाता है।

10.2 अंतर–माध्यम अनुवाद : अनुवाद का व्यापक संदर्भ

पाठ्यक्रम एम.टी.टी. 031 की इकाई 1 व 2 में आपने अनुवाद के व्यापक संदर्भ, सीमित संदर्भ, अनुवाद के बदलते स्वरूप तथा अनुवाद के विभिन्न प्रकारों के विषय में विस्तार से अध्ययन किया है। आइए, इस इकाई के संदर्भ में एक बार फिर से जानते हैं कि अनुवाद के व्यापक संदर्भ से क्या तात्पर्य है।

प्रतीक विज्ञान की मूलभूत इकाई प्रतीक है। प्रतीक सिद्धांत के प्रतिपादक पीयर्स के मतानुसार प्रतीक वह वस्तु है जो किसी के लिए किसी अन्य वस्तु के स्थान पर प्रयुक्त होती है। पीयर्स के अनुसार मनुष्य प्रतीक व्यवस्था में ही सोचते हैं। प्रतीक ही शब्दों, चित्रों, ध्वनियों, गंध, आस्वाद, क्रिया अथवा वस्तुओं का आकार लेते हैं। लेकिन मनुष्यों द्वारा इन प्रतीकों में अर्थ रखे जाने से ही ये प्रतीक कहलाते हैं। प्रतीक सिद्धांत के अन्य महत्वपूर्ण प्रवर्तक व संरचनावादी भाषाविद फर्दिनांद द सस्यूर के अनुसार प्रतीक दो तत्वों से मिलकर बना है – संकेतक अर्थात संकेतन प्रतीक व संकेतित अर्थात संकेतित वस्तु। प्रतीक के ये दोनों घटक मिलकर ही प्रतीक का निर्माण करते हैं। प्रतीक व्यवस्था में संकेतित वस्तु के लिए एक प्रतीक का प्रयोग होता है जिसे संकेतक कहते हैं। इस प्रकार संकेतक व संकेतित एक–दूसरे के पूरक हैं। इसी से संकेतार्थ स्पष्ट होता है। वहीं प्रतीक सिद्धांत के आधार पर रोमन जेकब्सन ने भाषिक पाठ के अंतरण को तीन आधारों पर देखने का प्रयास किया है –

- आंतर भाषिक अनुवाद (Intra lingual translation)
- अंतर भाषिक अनुवाद (Inter lingual translation)
- अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद (Inter semiotic translation)

आंतर भाषिक अनुवाद से तात्पर्य है एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त पाठ को उसी भाषा की अन्य प्रतीक व्यवस्था में रखना अथवा प्रस्तुत करना। इसे अन्वयांतर भी कहा जाता है। स्पष्ट है कि यहाँ दोनों प्रतीक व्यवस्थाएँ एक ही भाषा से संबंधित होती हैं। संस्कृत में लिखी गई टीकाएँ इसका उदाहरण हैं जहाँ जटिल संस्कृत में लिखे गए काव्य को सरल टीकाओं में व्यक्त किया गया है।

अंतर भाषिक अनुवाद : एक भाषा के प्रतीकों में व्यक्त पाठ को दूसरी भाषा के प्रतीकों में अंतरण को अंतरभाषिक अनुवाद कहते हैं। इसे भाषांतर भी कहा जाता है। स्पष्ट है कि आंतरभाषिक अनुवाद से अलग यह दो भाषाओं के अंतरण की क्रिया है। इस अनुवाद प्रकार में अनुवाद के लिए दो भाषाओं का ज्ञान होना अनिवार्य है। इसे ही अंग्रेजी में *'प्रॉपर ट्रांसलेशन'* कहा जाता है। वर्तमान समय में अंतरभाषिक अनुवाद के विशेष माँग

है। विश्व भर में सर्जनात्मक तथा ज्ञानात्मक साहित्य के प्रसार का आधार यही है। चूँकि इसमें दोनों भाषाओं की सक्रिय भूमिका होती है इसलिए इसका महत्व और बढ़ जाता है।

अंतर–प्रतीकात्मक अनुवादः जहाँ आंतर भाषिक और अंतरभाषिक अनुवाद में प्रतीक 2 का भाषिक इकाई होना अनिवार्य है वहीं अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद में प्रतीक 2 यानी लक्ष्य पाठ भाषिक न होकर भाषेतर होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इसमें भाषिक पाठ का अनुवाद भाषेतर इकाई में होता है। उदाहरण के लिए किसी उपन्यास या कहानी का फिल्म, नाटक या धारावाहिक में रूपांतरण। यहाँ अंतरण भाषिक न होकर रूपगत होता है। शरतचंद्र, प्रेमचंद, शेक्सपीयर, मन्नू भंडारी, रस्किन बॉण्ड, आदि की रचनाओं का फिल्म में रूपांतरण इसके उदाहरण हैं। प्रसिद्ध कविता का गीत में और गीत या कविता आदि का विज्ञापन के जिंगल में रूपांतरण भी अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद के उदाहरण हैं।

अनुवाद का व्यापक संदर्भ अनुवाद कर्म को विस्तार देता है। जहाँ अनुवाद का सीमित संदर्भ उसे मूलपाठ केंद्रित रखता है वहीं अनुवाद का व्यापक संदर्भ अनुवाद के दौरान अनुवादक को यथोचित छूट देने का पक्षधर है। सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न पद्धतियाँ जैसे – पुनःसृजन, नवसृजन, आत्मसातीकरण, अनुकूलन, रूपांतरण आदि अनुवाद के व्यापक संदर्भ के ही उदाहरण हैं जिनकी सहायता से असंभव से प्रतीत होने वाले साहित्य का भी एक सीमा तक अनुवाद संभव है। भारतीय साहित्य में अनुवाद के व्यापक संदर्भ के अनेक उदाहरण हैं। भक्तिकाल में *रामायण* तथा *श्रीमदभागवत* के विभिन्न भारतीय भाषाओं में हुए आत्मसातीकरण अथवा पुनःसृजन मूलतः अनुवाद के व्यापक संदर्भ के सटीक उदाहरण हैं।

अंतर माध्यम अनुवाद वस्तुतः अंतरविधात्मक अनुवाद है जिसमें अनुवादक एक विधा से दूसरी विधा में अनुवाद को संभव बनाते हैं। रूपांतरण से भिन्न अंतर माध्यम अनुवाद विभिन्न विधाओं में आवाजाही की छूट देता है। उदाहरण के लिए, किसी कविता पर बनाई गई पेंटिंग अथवा किसी कविता अथवा गीत पर होने वाली नाट्य प्रस्तुति।

रोमन जेकब्सन द्वारा अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद वस्तुतः अंतर माध्यम अनुवाद ही है किंतु उसकी एक सीमा यह भी है कि वह लिखित से दृश्य अथवा दृश्य–श्रव्य में ले जाने की बात करता है और इस प्रक्रिया में लिखित पाठ को ही अधिक महत्वपूर्ण तथा प्रामाणिक मानता है जबकि अंतर माध्यमिकता तथा इसी के अनुरूप अंतर माध्यम अनुवाद सभी माध्यमों के बीच आवाजाही का पक्षधर है तथा किसी भी माध्यम को कम या अधिक महत्वपूर्ण नहीं मानता। अंतर माध्यम अनुवाद के अनुसार अभिव्यक्ति की कोई भी विधा अपने आप में सार्थक हो सकती है। लिखित को मौखिक अथवा दृश्य से अधिक महत्वपूर्ण मानना साहित्य में निर्मित वर्चस्ववादी परंपरा का ही द्योतक है।

10.3 अंतर–माध्यम अनुवाद के विविध आयाम

10.3.1 अंतर माध्यम अनुवाद : अध्ययन की एक अंतरविधात्मक पद्धति

अंतर माध्यम अनुवाद पर बात करने से पहले आइए यह जानें कि अंतर माध्यम से क्या अभिप्राय है। तुतुन मुखर्जी अपने निबंध *Intrmediality and Translation : Pedagogical Possibilities* में लिखती हैं – *Intermedia as usage and idea was suggested by Fluxus avant-garde artist Dick Higgins in 1968 to refer to the fusions or blending of artistic media or mixed media. In the words of Werner Wolf who has written clearly and comprehensively on Intermediality and the Study of Literature explains (inter)mediality to simply mean the participation of more than one*

medium within an artefact. He adds that in a broad sense intermediality would mean 'transgressing of boundaries between conventionally distinct media.'

तुतुन मुखर्जी के अनुसार, अंतर माध्यम वस्तुतः एक से अधिक माध्यमों कें संयोग से बना एक ऐसा माध्यम है जो पारंपरिक माध्यमों की सीमाओं का अतिक्रमण कर अध्ययन के नए आयाम खोलता है। इसके अंतर्गत एक पाठ की व्याख्या करने के लिए विभिन्न माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि आप इंटरनेट पर किसी शब्द अथवा अवधारणा अथवा किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय ढूँढते हैं तो उस विषय विशेष से संबंधित निश्चित जानकारी के साथ ही लिंक तथा हाइपर लिंक की सहायता से उससे संबंधित अन्य जानकारी उपलबध करवा दी जाती है। ऐसी स्थिति में आप आवश्यक जानकारी के अतिरिक्त अन्य संबंधित ज्ञान से भी परिचित हो जाते हैं। ठीक इसी तरह, जब हम इंटरनेट पर किसी शब्द का अर्थ ढूँढते हैं तो कंप्यूटरीकृत शब्दकोश में उसका न केवल अर्थ प्राप्त होता है अपितु उससे संबंधित विभिन्न अन्य शब्द, जैसे – पर्याय, विलोम, बहुवचन, आदि के साथ ही उस शब्द के प्रयोग संबंधी जानकारी भी उपलब्ध हो जाती है। इसे ही मल्टीमॉडेलिटी, इंटरमिडियेलिटी अथवा अंतर–माध्यम कहा जाता है। ठीक इसी तरह, अंतर माध्यम अनुवाद भी साहित्य अध्ययन की एक आधुनिक पद्धति है जिसकी सहायता से किसी पाठ के बहुआयामी अर्थ को समझने में सहायता मिलती है। उदाहरण की सहायता से यदि बात की जाए तो अध्येताओं को समझाने के लिए किसी कहानी अथवा कविता पर बनी नाट्य प्रस्तुति। किसी पुस्तक पर बना वृत्तचित्र, ज्ञान–विज्ञान के विषयों पर बनाई गई टेलीफिल्म, वृत्तचित्र, ग्राफिक्स, एनिमेशन आदि। इन सब माध्यमों की सहायता से ज्ञान अर्जन न केवल सरल हो जाता है अपितु अधिक रोचक तथा संप्रेषणीय भी हो जाता है। जैसे – इंटरनेट पर आपने जानना चाहा कि मैकबेथ क्या है तो एक साथ आपको इससे संबंधित विभिन्न जानकारियाँ उपलब्ध हो जाएँगी जैसे – मैकबेथ संबंधित जानकारी कि वह किसकी रचना है, कब लिखी गई, उसकी कथावस्तु क्या है, आदि तथा साथ ही, मैकबेथ पर आज तक बनी फिल्में, नाटक, संवाद, एकांकी, शोधकार्य, उसमें प्रयोग होने वाले विभिन्न शब्द तथा उनकी अवधारणाएँ, उनके विभिन्न प्रयोग, उसके विभिन्न रूपांतरण संबंधित जो भी जानकारी इंटरनेट पर उपलब्ध होगी, वह सब एक साथ एक स्थान पर प्राप्त हो जाएगी जो उस विषय संबंधी आपके ज्ञान को न केवल बढ़ाएगी अपितु उसके माध्यम से आप उससे संबंधित अन्य जानकारियों को भी हासिल कर पाएँगे।

वहीं अपने निबंध *Translating Painting into Dance* में वेनेसा मोंटेसी अपनी बात को पुष्ट करते हुए *Bruhn* को उद्धृत करती हैं – *The discipline of intermediality developed from Interart Studies, opening its investigation to a broader set of aesthetic and technological practices, and thus overcoming the divide between high and low culture* (Bruhn 2016).

वे आगे Rajewsky को उद्धृत करती हैं – *The term Intermedialitat (intermediality) was introduced in 1983 by Hansen-Love and picked up recently as an umbrella term for all kinds of phenomena taking place among media* (Rajewsky 2010).

इंटरमीडिया अर्थात अंतर माध्यम को आगे व्याख्यायित करते हुए वे जोड़ती हैं – *The intermedial level is in turn divided into media combination, where different media are combined to form a new one (comic, ballet), media transposition, which concerns the coming into being of a new media product (adaptation, novelisation – here I will subsume them under the term intermedial translation), and intermedial reference, which happens when a medium imitates or evokes*

techniques that are normally associated with another but without crossing its own borders (Rajewsky 2010).

अर्थात अंतर माध्यम से तात्पर्य ऐसी मिश्रित विधा से है जिसमें विभिन्न माध्यमों के प्रयोग से एक नए माध्यम का उद्‌भव होता है और जो ज्ञान के संसार को विस्तार देने में सहायक है। वेनेसा मोंटेसी रूपांतरण को अंतर माध्यम का ही एक उदाहरण मानती हैं जिसमें किसी पाठ पर निर्मित फिल्म, वृत्तचित्र, नाटक अथवा ऑडियो बुक आदि उसके परिदृश्य को बहुकोणीय बनाता है। रूपांतरण की सहायता से लिखित पाठ अपनी भाषायी सीमाओं से मुक्त होकर दृश्यों तथा रिकॉर्डिंग, सबटाइटलिंग, डबिंग आदि की सहायता से जीवंत हो उठता है। रूपांतरण की सहायता से पाठ में वर्णित देशकाल तथा वातावरण को भी यथासंभव उभारा जा सकता है।

10.3.2 लिखित पाठ से श्रव्य तथा श्रव्य से लिखित पाठ

अनुवाद अध्ययन में अंतर माध्यम अनुवाद की ओर सबसे पहले संकेत रोमन जेकब्सन करते हैं जहाँ वे अनुवाद के तीन प्रकारों की चर्चा करते हुए अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद को भी अनुवाद का एक रूप मानते हैं। लेकिन इसकी सबसे बड़ी सीमा यही है कि वे लिखित माध्यम को अधिक महत्व देते हैं जबकि अंतर माध्यम के अंतर्गत विधा का कोई पदानुक्रम निर्धारित नहीं है। अर्थात अंतर माध्यम अनुवाद एक विधा से दूसरी विधा में अभिव्यक्त करने का पक्षधर है और इस क्रम में विभिन्न विधाओं के बीच अंतःक्रिया अथवा आवाजाही होती है। लिखित पाठ से श्रव्य तथा श्रव्य से लिखित पाठ अंतर माध्यम अनुवाद का एक प्रकार है। इस दृष्टि से कविता अथवा शायरों द्वारा लिखे गए कलामों पर बने गीत, लिखित नाटकों का रेडियो रूपांतरण तथा कथा साहित्य अथवा गैर–सर्जनात्मक साहित्य पर निर्मित ऑडियो बुक्स लिखित पाठ से श्रव्य के उदाहरण हैं।

आइए, लिखित से श्रव्य अनुवाद के कुछ प्रकारों की चर्चा करें –

कविताओं पर बने गीत – भारतीय सिनेमा में इसके अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं जहाँ प्रसिद्ध कवि तथा शायरों की कविताओं को गीतों में ढाला गया है। हरिवंशराय बच्चन द्वारा लिखित *अग्निपथ* इसका उदाहरण है।

कथा साहित्य पर निर्मित ऑडियो बुक्स – कथा साहित्य का ऑडियो रूप वर्तमान समय में बेहद प्रचलित है। यूँ तो पहले भी दृष्टिबाधित लोगों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए ऑडियो बुक्स का प्रचलन था लेकिन वर्तमान में समयाभाव को देखते हुए तथा रिकॉर्डिंग की सरल तथा सहज व्यवस्था उपलब्ध से यह विधा और अधिक प्रचलित हो रही है। अब हम अपना मनपसंद साहित्य ऑडियो रूप में भी सुन सकते हैं।

रेडियो रूपांतरण – विभिन्न महत्वपूर्ण नाटककारों द्वारा लिखित नाटकों का रेडियो रूपांतरण तथा विभिन्न रचनाकारों की कहानियों व उपन्यासों का रेडियो द्वारा प्रसारण इसके अन्यतम उदाहरण हैं।

पॉडकास्ट – पॉडकास्ट भी लिखित से श्रव्य का अन्यतम उदाहरण है। सीमित समयावधि में छात्रों की सुविधा के लिए तथा उन्हें घर बैठे सामग्री उपलब्ध करवाने की दृष्टि से पॉडकास्ट बेहद कारगर हैं। इसके अंतर्गत अध्ययन सामग्री को रोचक ढंग से रिकॉर्ड करके तथा वॉयस मॉड्यूलेशन आदि का प्रयोग करके विभिन्न विषयों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। कोविड के दौरान प्रचलित हुई ऑनलाइन शिक्षा में विभिन्न श्रेणी के छात्रों के लिए इसका प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया गया।

श्रव्य से लिखित पाठ निर्माण के अंतर्गत गीत, कविता, संगीत आदि को सुनते हुए उस पर पेंटिंग बनाना, किसी लोकगीत अथवा कथा को आधार बनाकर कोई कविता अथवा कहानी

लिखना, तथा विभिन्न विलुप्त हो रही परंपराओं, गीतों, तथ्यों, कथाओं, इतिहास आदि को

10.3.3 लिखित पाठ से दृश्य–श्रव्य तथा दृश्य–श्रव्य से लिखित पाठ

लिखित पाठ से दृश्य–श्रव्य के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं। पाठ से दृश्य, पाठ से मंच तथा स्क्रीन रूपांतरण इसके अन्यतम उदाहरण हैं।

पाठ से दृश्य रूपांतरण से तात्पर्य किसी रचना को आधार बनाकर निर्मित चित्र तथा पेंटिंग से है। इसमें उदाहरण स्वरूप रबींद्रनाथ टैगोर द्वारा अपनी ही कविताओं को आधार बनाकर बनाए गए चित्र देखे जा सकते हैं। इसके साथ ही, विश्व साहित्य से कुछ और महत्वपूर्ण रचनाओं को लिया जाए तो शेक्सपीयर के नाटक *हेमलेट* की चरित्र *ओफेलिया* के आधार पर जॉन एवरेट मिलियास द्वारा निर्मित पेंटिंग *ओफेलिया* भी इसका एक खूबसूरत उदाहरण है। इसी तरह, लुईस केरोल के बेहद चर्चित उपन्यास *एलिस इन वंडरलैंड* को आधार बनाकर सल्वाडोर डली द्वारा 12 अध्यायों के आधार पर बनाई गई पेंटिंग की श्रृंखला को भी उदाहरणस्वरूप देखा जा सकता है।

पाठ से मंच रूपांतरण के अंतर्गत किसी लिखित विधा को दृश्य–श्रव्य यानी नाटक में ढाला जाता है। इसके अंतर्गत कहानी, उपन्यास, कविता आदि पर निर्मित नाट्य प्रस्तुतियाँ इसके उदाहरण हैं। विश्व साहित्य में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहाँ चर्चित कहानियों तथा उपन्यासों आदि पर अनेक नाट्यमंचन हुए हैं। हिंदी के महत्वपूर्ण कवि मुक्तिबोध की कविता *अंधेरे में, ब्रह्मराक्षस,* निराला की कविता *राम की शक्तिपूजा* तथा जयशंकर प्रसाद के काव्य *कामायनी* पर निर्मित नाट्य प्रस्तुतियों को यहाँ उदाहरणस्वरूप देखा जा सकता है।

इसी तरह पाठ से स्क्रीन रूपांतरण के अंतर्गत कथा साहित्य पर निर्मित फिल्में देखी जा सकती हैं। विश्व सिनेमा की बात करें तो ऐसे अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं। एलिस वॉकर के उपन्यास *'द कलर पर्पल'* पर निर्मित फिल्म *'द कलर पर्पल'*, विंसटन ग्रूम की रचना फॉरेस्ट गंप पर इसी नाम से निर्मित फिल्म, मारियो पूज़ो के उपन्यास *'द गॉडफादर'* पर इसी नाम से निर्मित फिल्म, जेम्स जॉयस की कहानी *'द डेड'* पर इसी नाम से बनी फिल्म आदि। भारतीय सिनेमा में साहित्यिक रूपांतरण के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं जिनमें प्रेमचंद की कहानी *'शतरंज के खिलाड़ी'* पर बनी फिल्म, राजेंद्र यादव के उपन्यास *'सारा आकाश'* पर बनी फिल्म, मन्नू भंडारी की कहानी पर बनी फिल्म *'रजनीगंधा'*, विजयदान देथा की कहानी *'दुविधा'* पर 'बनी *पहेली'*, शरतचंद्र के उपन्यासों *'परिणीता'*, *'देवदास'* पर बनी फिल्में, महाश्वेता देवी की रचना *'हजार चौरासीवें की मां'* पर बनी फिल्म आदि।

10.4 अंतर–माध्यम अनुवाद : साहित्य के विस्तार के संदर्भ में

अनुवाद चिंतक मारिया टिमोक्ज़को अपने निबंध *Enlarging Translation, Empowering Translators* (2007) में यह चिंता व्यक्त करती हैं कि अनुवाद की परिभाषा को यूरोकेंद्रित अथवा पश्चिम केंद्रित रखना उसकी संभावनाओं को सीमित अथवा अनदेखा करना है। वे अपने इस निबंध में अनुवाद के पाश्चात्य सिद्धांतों में विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों से आने वाले अनुवाद सिद्धांतों को भी शामिल करने की बात कहती हैं। अपने इस निबंध में टिमोक्ज़को अनुवाद को एक भाषा से दूसरी भाषा में ले जाने वाली गतिविधि तक सीमित करने का विरोध करती हैं क्योंकि वह मूल पाठ की निष्ठा के इर्द–गिर्द ही बुना होता है। टिमोक्ज़को के अनुसार अनुवाद के संरचनापरक सिद्धांत

उसे समतुल्य खोजने तक ही सीमित कर देते हैं। नायडा के अनुसार *Translation is the replacement of textual material in one language (SL) by equivalent textual material in another language.* वहीं संरचनावादी भाषाविद् सस्यूर के अनुसार भाषा के दो स्तर होते हैं – बाह्य संरचना (surface structure) तथा आंतरिक संरचना (deep structure)। भाषा की बाह्य संरचना जहाँ भाषा के व्याकरणिक रूप की ओर संकेत करती है, वहीं भाषा की आंतरिक संरचना भाषा की सामाजिक–सांस्कृतिक निर्मिति की ओर संकेत करती है। संकेतक और संकेतित की यह नियत परिभाषा न केवल भाषा की बहुआयामिता को बाधित करती हैं अपितु अनुवाद की भाषा केंद्रित ये परिभाषाएँ उसके विस्तार पर भी अंकुश लगाती हैं। अनुवाद की इस सीमित समझ को गेंबियर तथा केंदल जैसे अनुवाद चिंतक चुनौती देते हैं और अनुवाद को पुनःपरिभाषित करते हुए अंतर माध्यम तथा बहुमाध्यम को शामिल करने की वकालत करते हैं। केंदल अपने निबंध *Multimodality in Translation* में लिखते हैं – *if we take multimodality seriously, this ultimately means that transfer of texts without language dimension or the concentration on non-language modes of a text are a part of the prototypic field of translation studies*. अर्थात यदि बहुमाध्यम को गंभीरता से लिया जाए तो वह अनुवाद अध्ययन के लिए आदर्श होगा क्योंकि इसमें भाषा की बाध्यता से परे अथवा गैर–भाषा आधारित माध्यमों की सहायता से पाठ का अंतरण अधिक सुगम और बेहतर होगा।

उत्तर–आधुनिक चिंतक जॉक देरिदा के अनुसार भी भाषा शब्द को एक नियत अर्थ के साथ बाँधती है। वे भाषा में संकेतक तथा संकेतित की तय भूमिका का विरोध करते हैं और कहते हैं कि एक संकेतक का एक नियत संकेतित अर्थ पाठ की बहुआयामिता को बाधित करता है जिसके परिणामस्वरूप पाठ में छिपे विभिन्न संदर्भ अनदेखे रह जाते हैं। वे पाठ को एक मुक्त इकाई के रूप में देखते हैं और मानते हैं कि लिखने अथवा प्रकाशित हो जाने के बाद पाठ लेखक से मुक्त होकर पाठक का हो जाता है और पाठक विभिन्न संदर्भों, परिस्थितियों तथा कालखंडों में उसमें छिपे विभिन्न निहितार्थों को डीकोड कर सकते हैं। अनुवाद अध्ययन में पाठ को भाषा की सीमा से मुक्त करने की वकालत करते हुए मारिया टिमोक्ज़को, केंदल तथा गेंबियर अपने निबंधों में उसके बहुआयामी होने की ओर संकेत करते हैं और मानते हैं कि जब कोई पाठ किसी एक तरीके अथवा पद्धति से ही अनूदित न होकर विभिन्न विधाओं, शैलियों तथा अभिव्यक्ति के माध्यमों में अभिव्यक्त होगा तब वह अधिक खुलेगा, पाठक अथवा सुधिजनों से और अधिक गहरे जुड़ेगा तथा विभिन्न माध्यमों में अभिव्यक्त होकर उसकी पहुँच अधिक विस्तृत होगी।

उदाहरण के रूप में यदि बात की जाए तो छायावादी कवि निराला द्वारा रचित *'राम की शक्ति पूजा'* कविता का पाठ जहाँ उसके विभिन्न संदर्भों और तत्कालीन समय में उसकी प्रासंगिकता को सिद्ध करता है वहीं उसका नाट्य मंचन वर्तमान समय में उसके महत्व को और दुगुना कर देता है। मंचन, पाठन, गायन आदि विभिन्न माध्यमों से गुज़रते हुए वह रचना अपनी भाषा, विधा, सहृदय वर्ग तथा कालगत सीमा को लाँघकर एक व्यापक समाज तक पहुँचती है और सही मायनों में कोई रचना कालजयी हो जाती है। भाषा की उत्तर–संरचनावादी परिभाषा की दृष्टि से देखा जाए तो विभिन्न माध्यमों की सहायता से रचना में निहित संदर्भ संकेतक और संकेतित की सीमित परिभाषा से मुक्त होकर वस्तुतः पाठक, दर्शक, श्रोता, सहृदय की बायनरी से मुक्त होकर बहुआयामी हो जाती है और सहृदय अपनी क्षमता के अनुसार उसका आस्वादन करते हैं।

अंतर माध्यम अनुवाद के पक्ष में अपनी बात कहते हुए तुतुन मुखर्जी अपने इसी निबंध में कहती हैं कि पाठ के साथ अंतर माध्यम अनुवाद अथवा प्रस्तुति के माध्यम से पाठ न

केवल अधिक प्रामाणिक हो जाता है अपितु पाठ की आलोचनात्मक अथवा विवेचनात्मक समझ निर्मित करने में पाठक अथवा सहृदय की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। वे लिखती हैं कि यह वास्तव में बोर्दिआ द्वारा चर्चित साहित्य के स्वतुल्य समाजशास्त्र अर्थात रिफ्लेक्सिव सोशयोलॉजी का उदाहरण है जिसमें साहित्य स्वयं अध्ययन का विषय बन जाता है और उसके माध्यम से सामाजिक परिस्थितियों का अध्ययन किया जा सकता है। सरल शब्दों में कहें तो साहित्य के अध्ययन को केवल उस विषय विशेष तक सीमित न रखकर यदि समाजशास्त्रीय संदर्भ में देखा जाए तो वह समाज में हो रहे परिवर्तनों के कारणों की पड़ताल का माध्यम हो सकता है। अंतर माध्यम तकनीकों की सहायता से यदि साहित्य को व्यापक संदर्भ में देखा व समझा जाए तो उसकी भूमिका केवल सौंदर्यशास्त्रीय न रहकर व्यापक अर्थों में समाजशास्त्रीय हो जाती है।

अंतर माध्यम अनुवाद अथवा पाठ के प्रस्तुतीकरण में विभिन्न माध्यमों के प्रयोग से पाठ न केवल बहुआयामी होता है अपितु पाठक अथवा सहृदय के लिए उसका अभिग्रहण भी उतना ही बहुआयामी हो जाता है।

अपने इसी निबंध में तुतुन मुखर्जी अंतर–माध्यम अनुवाद का समर्थन करते हुए गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक को उद्धृत करते हुए लिखती हैं कि अनुवाद को नकल अथवा कृत्रिमता से ऊपर उठकर अधिक सक्रिय रूप में काम करना चाहिए। अनुवाद को केवल भाषांतरण तक सीमित नहीं होना चाहिए और अर्थ के विभिन्न आयामों तक पहुँचना चाहिए। वे देरिदा के विखंडनवाद का संदर्भ लेते हुए कहती हैं कि पाठ के अनुवाद में संकेतक तथा संकेतित के माध्यम से एक निश्चित अर्थ तक पहुँचना ही अनुवाद का काम न हो अपितु शब्द का कार्य इससे व्यापक हो जो अपनी पुनःप्रस्तुति में विभिन्न अर्थच्छायाओं को समेटे हुए हो। *(The translation practice must move beyond the simple correspondence of languages and try to 'play' with their materiality. The philosophy of deconstruction suggests that instead of constituting the end product as a synthesis or a unification of the signifier and signified, the word must be regarded as a force-field of disassociations. Pg 14)* इस तरह अस्थिर संकेतक की अवधारणा को केंद्र में रखकर किया गया अनुवाद अंतर्पाठीयता तथा संदर्भों के नए आयामों तक पहुँचेगा। *(Any translation inspired by the concept of the 'floating signifier' would thus search for new intertextualities and associations. (pg. 14)*

और यह सब तभी संभव होगा जब किसी पाठ को तथा उसके अनुवाद को भाषायी सीमा से मुक्त कर उसका बहुआयामी अनुवाद किया जाएँ ट्रांसलेशन प्रॉपर की सीमित परिभाषा से बहुत आगे यह अनुवाद अपने कलेवर में पुनःसृजन, नवसृजन, आत्मसातीकरण, रूपांतरण तथा अंतर–माध्यम अनुवाद को समेटे हुए है जो पाठ के पुनःप्रस्तुतीकरण में विभिन्न तरीकों तथा तकनीकों की मदद लेने का पक्षधर है। इसी आधार पर जब किसी पाठ का अनुवाद किया जाता है तो वह बहुआयामी हो जाता है और उस पाठ के आस्वादन में केवल पाठ या लेखक का सीमित दृष्टिकोण ही नहीं होता अपितु रूपांतरणकर्ता अथवा अनुवादक का अपना दृष्टिकोण, तकनीक, परिवेश, और उससे जुड़े विभिन्न संदर्भ जुड़ते चले जाते हैं। ऐसी स्थिति में किसी भी पाठ का अध्ययन एकांगी हो ही नहीं सकता।

अंतर–माध्यम के एक प्रकार के रूप में ही रूपांतरण को देखा जाता है। इसके अंतर्गत किसी सर्जनात्मक अथवा गैर–सर्जनात्मक पाठ का पुनःप्रस्तुतीकरण किया जाता है। इकाई के अगले भाग में अंतर–माध्यम के एक प्रकार के रूप में रूपांतरण की चर्चा की जा रही है।

10.5 रूपांतरण : अंतर–माध्यम अनुवाद का एक प्रकार

अभी तक आपने जाना कि अंतर–माध्यमिकता से क्या आशय है। इसके साथ ही आपने अंतर–माध्यम अनुवाद के विषय में विस्तार से अध्ययन किया। अंतर–माध्यम अनुवाद किसी पाठ को बहुआयामी बनाता है। साहित्य के प्रचार–प्रसार में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। अंतर–माध्यम अनुवाद के एक प्रकार के रूप में रूपांतरण को देखा जा सकता है। रूपांतरण की विभिन्न तकनीकों के माध्यम से पाठ भाषायी बंधन से मुक्त होकर अधिक संप्रेषणीय हो जाता है तथा भाषायी, सामाजिक–सांस्कृतिक, भौगोलिक व कालखंड की सीमाओं को लाँघकर एक व्यापक समाज से जुड़ जाता है। परिणामस्वरूप वह व्यापक समाज उस पाठ का आस्वादन करते हुए उसे अपने समाज व परिस्थितियों में रखकर देखता है व डीकोड करता है। ऐसा होते ही, वह पाठ लेखक के सीमित दायरे से मुक्त होकर व्यापक समाज से जुड़ जाता है तथा उसकी विभिन्न व्याख्याएँ संभव हो जाती हैं। देरिदा के दृष्टिकोण से देखा जाए तो वह पाठ निश्चित संकेतक व व उसके संकेतार्थ तक सीमित नहीं रहता। रूपांतरण के माध्यम से ऐसे अनेक उदाहरण आपने भी अवश्य देखे होंगे।

रूपांतरण को विभिन्न विद्वानों ने अलग–अलग तरीके से व्याख्यायित किया है। इस संदर्भ में विनय तथा डार्बलनेट द्वारा दी गई परिभाषा सबसे उपयुक्त है। विनय तथा डार्बलनेट अनुवाद की सात विभिन्न पद्धतियाँ बताते हैं जिनमें सातवीं अनुवाद पद्धति है – रूपांतरण।

Adaptation is a procedure which can be used whenever the context referred to in the original text does not exist in the culture of the target text, thereby necessitating some form of re-creation.

अर्थात अनुवाद की एक ऐसी पद्धति हैं जिसका उपयोग लक्ष्यभाषा और संस्कृति में समतुल्य न मिलने पर किया जा सकता है। इस प्रकार रूपांतरण मूलतः लक्ष्यभाषा में पुनःसृजन की ओर ले जाता है। स्पष्ट है कि विनय तथा डार्बलनेट द्वारा दी गई रूपांतरण की परिभाषा अपने स्वरूप में बेहद व्यापक है जिसके अंतर्गत पुनःसृजन, अनुसृजन, नवसृजन, अनुकूलन, रूपांतरण सबको समेटा जा सकता है।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ट्रांसलेशन स्टडीज़ के अनुसार अनुवादक/अनुवादिका विभिन्न परिस्थितियों में रूपांतरण को एक रणनीति के रूप में उपयोग करते हैं –

1. क्रॉस–कोड ब्रेकडाउन अर्थात लक्ष्यभाषा में निकटतम समतुल्य न मिलने की स्थिति में – जब स्रोतभाषा पाठ में प्रस्तुत किसी अवधारणा का समतुल्य लक्ष्यभाषा में उपलब्ध ही न हो।
2. पारिस्थितिक अथवा सांस्कृतिक अपर्याप्तता – जब स्रोतभाषा पाठ में प्रस्तुत कोई संदर्भ अथवा विचार लक्ष्य भाषा में उपलब्ध न हों।
3. विधागत परिवर्तन – जब मूलभाषा पाठ के अनुवाद के दौरान उसमें विधागत परिवर्तन कर दिया जाए ऐसा अक्सर पाठ को वैश्विक स्तर पर प्रसिद्धि दिलवाने के लिए किया जाता है।
4. संप्रेषण प्रक्रिया में विध्न होने पर – जब किसी पाठ को रूपांतरण के माध्यम से एक नया आयाम देना अथवा अलग पाठक अथवा दर्शक वर्ग के लिए मूल पाठ की शैली, कथ्य अथवा प्रस्तुति में परिवर्तन करना।

पिछली इकाई में हम पढ़ चुके हैं कि अनुवादक विभिन्न स्थितियों में पाठ का रूपांतरण करते हैं। सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद वस्तुतः रूपांतरण का ही उदाहरण है क्योंकि सर्जनात्मक साहित्य में निहित समाज विशेष की संस्कृति और परिवेश अनुवादक के लिए विशेष चुनौती होते हैं। ऐसे में अनुवादक पाठ विशेष का अनुवाद करते हुए यथासंभव छूट लेते हैं और सांस्कृतिक परिवर्तन करते हुए पाठ का अनुवाद करते हैं। किंतु मंच तथा फिल्म रूपांतरण के संदर्भ में कहें तो फिल्म रूपांतरण का वास्तविक उद्देश्य क्रॉस–कोड ब्रेकडाउन अर्थात लक्ष्य भाषा में निकटतम समतुल्य की अनुपलब्धता न होकर पाठ को व्यापक समाज तक पहुँचाना तथा इसके माध्यम से उसे विश्वव्यापी बनाना है। विशेषतौर पर फिल्म रूपांतरण की बात करें तो निर्देशक किसी भाषा विशेष से कथा अथवा कविता को उठाकर उसे एक अलग परिवेश में निर्मित करते हैं और इस तरह उसकी प्रभावोत्पादकता में वृद्धि करते हैं। उदाहरण के लिए, 1957 में तपन सिन्हा द्वारा रबींद्रनाथ टैगोर की कहानी *काबुलीवाला* पर बनी बांग्ला तथा हिंदी फिल्मों को देखा जा सकता है। अपने उसी निबंध में तुतुन मुखर्जी लिखती हैं कि बांग्ला समाज में अफगानी व्यापारियों को लेकर एक नकारात्मक छवि है कि वे बहुत क्रूर होते हैं। किंतु रबींद्रनाथ टैगोर की कहानी *काबुलीवाला* में काबुलीवाला का चरित्र एक बेहद ममतामयी तथा निश्छल व्यक्ति का है जो नन्हीं–सी बच्ची मिनी को देखकर भावुक हो जाता है और अपनी बच्ची को याद करता है। इसी कहानी पर 1961 में बिमल रॉय द्वारा निर्मित फिल्म *काबुलीवाला* हिंदी समाज में उसी बांग्ला कथा को एक नए मायने में प्रस्तुत करती है जहाँ *काबुलीवाला* की भूमिका में बलराज साहनी बेहद ममतामयी, सरल और निश्छल दिखाई देते हैं। और इन दोनों ही फिल्मों के माध्यम से अफगानी व्यापारियों के लिए निर्मित नकारात्मक छवि को तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस दृष्टि से देखा जाए तो रूपांतरण पाठ के संकेतक तथा संकेतित तक सीमित अर्थ को विस्तार देकर उसे बहुआयामी बनाता है। अनुवाद का सीमित संदर्भ जहाँ पाठ को मूल के निकट तथा समतुल्य बनाने पर बल देता है वहीं अनुवाद का यह व्यापक संदर्भ उसे संकेतक तथा संकेतित, मूल पाठ तथा अनूदित पाठ, मूल तथा नकल की बायनरी से मुक्त कर एक स्वतंत्र इकाई के रूप में स्थापित करता है।

10.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने जाना कि अंतर–माध्यमिकता से क्या तात्पर्य है, अंतर–माध्यम अनुवाद से क्या तात्पर्य है तथा अंतर–माध्यम अनुवाद किस प्रकार पाठ को अपनी सीमाओं से मुक्त कर उसे बहुआयामी बनाता है। किसी भी पाठ या संदर्भ को यदि उसके सीमित संदर्भ तथा सीमित माध्यम में समझा जाए तो कई बार उसके एकांगी हो जाने की आशंका रहती है। लेकिन उस पाठ की व्याख्या में यदि विभिन्न माध्यमों की सहायता मिल जाए तथा पाठक या भोक्ता उसका आस्वाद करते हुए उसके अनेक संदर्भों तथा निहितार्थों तक पहुँच पाए तो उससे न केवल रचना बहुआयामी तथा बहुपक्षीय हो जाती है अपितु एक पाठक अथवा सहृदय के रूप में उसके ग्राहक का भी चहुँमुखी विकास होता है। अंतर–माध्यम अनुवाद मूलतः पाठ को अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों, तकनीकों तथा विधाओं से जोड़ने का पक्षधर है जिनकी सहायता से पाठ अपनी भाषायी, क्षेत्रीय, काल, विधा आदि की सीमाओं से मुक्त होकर बहुआयामी हो जाता है और इस तरह एक व्यापक सहृदय समाज तक जुड़कर न केवल पाठ का अर्थांतरण करता है अपितु उससे जुड़े समय, समाज, इतिहास आदि विभिन्न आयामों से भी परिचित करवाता है। रूपांतरण अंतर–माध्यम अनुवाद का एक बेहद महत्वपूर्ण तथा चर्चित प्रकार है जो सर्जनात्मक साहित्य – कथाओं, कविताओं, नाटकों, गीतों से लेकर ज्ञान प्रधान साहित्य

–इतिहास, विज्ञान, समाजशास्त्र आदि विभिन्न विषयों को विभिन्न तकनीकों की सहायता से पुनःप्रस्तुत करके अधिक ग्राह्य, सुगम तथा रोचक बनाता है।

10.7 अभ्यास के लिए पश्न

1. अंतर–माध्यम से क्या अभिप्राय है?
2. विभिन्न अंतर–माध्यम तकनीकें कौन–कौन सी हैं?
3. अंतर–माध्यम अनुवाद से आप क्या समझते हैं?
4. अनुवाद के सीमित संदर्भ तथा व्यापक संदर्भ में क्या अंतर है?
5. रोमन जेकब्सन के अनुवाद सिद्धांत में अंतर प्रतीकात्मक अनुवाद की व्याख्या कीजिए।
6. किसी पाठ के संप्रेषण एवं अभिग्रहण में अंतर–माध्यम अनुवाद क्या भूमिका निभाता है?
7. अंतर–माध्यम अनुवाद और रूपांतरण में क्या अंतर है?
8. क्या रूपांतरण अंतर–माध्यम अनुवाद का एक प्रकार है? यदि हाँ, तो वर्णन कीजिए।
9. अनुवाद की एक रणनीति के रूप में रूपांतरण की व्याख्या कीजिए।
10. पाठ के संकेतक और संकेतित अर्थ से क्या अभिप्राय है?

10.8 उपयोगी पुस्तकें

- Catford, John Cunnison, 1965, A Linguistic Theory of Translation, Oxford : Oxford University Press.
- Tymoczko, Maria, 2006, Reconstructing Translation Theory, Integrating non-western Thought about Translation, Theo Hermans (ed.), (2006). Translating Others, vol.1. Manchester:John Benjamin Publishing Company.
- Tymoczko, Maria, 2007, Enlarging Translation, Empowering Translators, Manchester : St. Jerome Publishing
- Mukherjee, Tutun, 2012, Tagore's Women Protagonists through Ray's Camera : Re-presenting the Shifting Concepts of History, Culture and Identity, In Mohd. Asaduddin and Anuradha Ghosh (eds.), Filming Fiction : Tagore, Premchand and Ray, New Delhi, Oxford University Press.
- Mukherjee, Tutun, Intermediality and Translation: Pedagogical Possibilities, https:èèwww.ntm.org.inèdownload/ttvolèvolume12-2èarticle%201.pdf
- Montessi, Vanessa, Translating Paintings into dance : Marie Chouinard's The Garden of Earthly Delights and the challenges posed to a verbal-based concept of Translation, https://jostrans.orgèissue35èart_montesi.pdf

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY